1

## "प्रभु ! हमारे लिए कब आओगे ?"

परम शिव और शिव 'वो ही' एक ही है। उसी की सब लीला है। अपने से ही - अपने संकल्प से ही वह प्रकट होता है। वह परम-शुद्ध चेतन 'मेरी अपनी आत्मा है', 'मैं ही हूँ', यही निश्चय कराने के लिए और भव सागर पार कराने के लिए उस सत्ता को साकार रूप में आना पड़ता है। गीता में कृष्ण कहते हैं जब जब धर्म की ग्लानि होती है और धरती पर, अत्याचार बढ़ जाते हैं तो पैगम्बर को प्रकट होना पड़ता है। भक्त कष्टों से घिरे थे। भक्तों ने पुकारा - "प्रभु ! हमारे लिए कब आओगे?" सत्चित आनन्द के अथाह सागर में संकल्प का उछाल आया। एक ऊँची लहर उठी।

समय ने इसे 'दादा भगवान' के नाम से बुलाया। बून्द है या लहर है या सागर है --- सब पानी है। निराकार ही साकार रूप धारण करके धरती पर अवतरित होता है।

"पूर्ण मदः पूर्ण मिदं पूर्णात पूर्ण मुदच्यते
पूर्णस्य पूर्ण मादाय - पूर्ण मेवा वशिष्यते"
पूर्ण से पूर्ण ही प्रकट हुआ - जो, शेष है - पूर्ण ही है - है ही है" ॥

ब्रह्मज्ञानी आप परमेश्वर

कृष्ण कहते हैं "मैं अनादि हूँ" "अनन्त हूँ"। जिसका आदि नहीं अन्त नहीं तो मध्य भी नहीं है। पर फिर भी भासता है। इसी तरह लोक भाषा में हम कहते हैं दादा भगवान का जन्म तीन जनवरी १८९१ में हैदराबाद सिन्ध में हुआ।

वह एक धनाढ्य परिवार में प्रकट हुए। मुहावरा है Born with a silver spoon in the mouth चान्दी का चमच मुंह में लेकर, पर दादा भगवान सोने का चमच लेकर आये। बचपन से वह निराले निराले थे। वह सदा खुश रहते और सब को खुश रखते थे। अपने सब सुख -

सबमे बाँट कर उन्हें खुशी मिलती थी। किसी के थोड़े सुख के लिए वह खुद कष्ट सहन कर लेते थे।

दादा भगवान की शिक्षा Convent अंग्रेजी स्कूल से शुरू हुई - पढाई में वह हमेशा आगे रहते। क्लास में; जो कमजोर लड़के थे दादा भगवान को उनका ध्यान रहता। वह उनके homework में मदद करते, जिससे वह बच्चे सज़ा से बच जाते थे। इम्तहानों के दिनों में दादा भगवान, उनको पढाई में मदद करते तो वह बच्चे fail होने से बच जाते थे। उन कमजोर लड़कों को दादा भगवान कहते: टीचर से प्रश्न करो। प्रश्न करो ताकि उनके संशय दूर होवे। क्लास में लड़के डर जाते तो उनकी तरफ से दादा भगवान ही प्रश्न करते। यह छोटी बात थी कि प्रश्न उत्तर करने से पढाई समझ में आती है। बाद में दादा भगवान इसी बात को बड़ा महत्व देते थे। प्रश्न उत्तर करने से ही संशय नष्ट होंगे और ज्ञान अन्दर बैठेगा।

दादा भगवान की छोटी उम्र में ही छोटे छोटे परोपकार शुरू हो गये थे। दादा भगवान को अमीर, गरीब, तेरा, मेरा का भेद भाव नहीं था। इसी से वह अपनी क्लास के और सभी टीचर्स के चहेता थे।

एक बार स्कूल का सालाना जलसा था। Stage पर बच्चों ने ड्रामा खेलना था। दादा भगवान को बहुत important role खेलने को मिला।

दादा भगवान बीमार हो गए, तेज बुखार हो गया था। स्कूल के प्रिन्सिपल को और staff को चिन्ता हो गई। दादा भगवान के बिना, वह drama होना मुमकिन ना था। निराकार ने खेल बनाना था। दादा भगवान का बुखार उतर गया। शरीर में कमजोरी थी पर दादा भगवान का मनोबल, बलशाली था। उन्होंने अपना part बहुत अच्छा play किया। जो सब ने पसन्द किया। इस लीला का दादा भगवान पर बहुत प्रभाव पड़ा।

उन्हें निश्चय हो गया 'होने वाली बात होती है, नहीं होने वाली बात नहीं होती है। इसलिए प्रभु का काम, प्रभु पर छोड़ देने से सब ठीक हो जाता है। दादा भगवान को विश्वास हो गया कि भगवान ने जिस से सेवा लेनी है, तो उसकी रक्षा खुद करता है। हम अपनी चिन्ता क्यों करें? इस घटना से दादा भगवान के अन्दर से मौत का डर हमेशा के लिए निकल गया। वह हर बात में निर्भीक हो गये।

अब दादा भगवान को खतरों से खेलने में कोई खतरा नहीं लगता था। एक बार दादा भगवान वहां चले गए जहां बारूद बिछाया गया था, धमाका हुआ। पहाड़ फटा, पत्थर टूट टूट कर चारों दिशाओं में उड़े, पर दादा भगवान का बाल तक बांका नहीं हुआ।

इससे दादा भगवान का परमात्मा पर विश्वास और भी दृढ़ हो गया। "जिसको राखे साईंयां

मार सके नहीं कोय"।

घर वालों को चिन्ता होती थी कि इतना निडर और लापरवाह होना ठीक नहीं। दादा भगवान उन्हें तसल्ली देते "मुझे तो मौत मार ही नहीं सकती"।

आगे चल कर दादा भगवान ने यही निश्चय सबको कराया "तू मरने वाला नहीं है। काल की क्या मजाल है जो तुझे मारे।" जमीन में बीज पहले पड़ता है और फल बाद में निकलता है। "मैं अजर अमर आत्मा हूँ" यह foundation का बीज दादा भगवान में था ही था जो आंखों से ओझल था, पर जब फल निकला तो सारे विश्व ने देखा और जय जय कार किया। लखनऊ में दादा भगवान के शब्द थे "मेरी मौत ही नहीं है ऐसी कोई तलवार ही नहीं है जो मुझे काट सके"। अंग्रेजी में कहावत है "Coming events cast their shadows before". दादा भगवान के जीवन आदर्श की झांकी हमें उनके विद्यार्थी जीवन में मिलती है।

# "दादा भगवान का व्यवसायिक काल"

पढाई समाप्त करके दादा भगवान ने अपना पारिवारिक व्यवसाय संभाल लिया। कपड़े का कारखाना था, और हीरों का आयात-निर्यात था। कपड़े की दुकान भी थी, जहां दादा भगवान खुद बैठते थे। कभी कभी कोई ऐसा ग्राहक भी आता था, उसे कपड़ा तो पसन्द होता पर खरीदने को पूरे पैसे नहीं होते थे. तो दादा भगवान को उस पर करुणा होती। उस वक्त, वह दाम कम बता कर घाटे में ही कपड़ा बेच देते थे। इसके लिए उन्हें डांट भी खानी पड़ती थी। औरों की खुशी के लिए दादा भगवान को कम खाना और डांट खाना दोनों मंजूर थी।

दादा भगवान की बुद्धि तीक्ष्ण थी। तभी उन्हें ज्यादा मेहनत करने की जरूरत नहीं पड़ती थी। जल्दी ही वह हीरों के निपुण पारखी बन गये। इस धन्धे में लाखों की कमाई थी। एक बार दादा भगवान ने लंडन में हीरे खरीदे। इतने में ही एक ग्राहक मिल गया। दादा भगवान ने उसे वह हीरे बेच दिये। इस दस मिनट के खरीदने और बेचने में एक लाख का नफा हो गया। दादा भगवान को Cars का शौक था। तब Cars विलायत से import होकर आती थी। Market में जो भी नया model आता था, दादा भगवान वो Car खरीद लेते थे। दादा भगवान की सारी Shopping और Suits की stitching London में होती थी। बच्चों को संभालने के लिए European आया रखी जाती थी। दादा भगवान ने भारत वापस लौटना था तो वो London से Spain घूमते हुए सैर करते हुए लम्बे रास्ते से आये। पूरी शहंशाही थी।

[illegible] के सिलसिले में दादा भगवान का विदेश आना जाना लगा रहता था। एक बार वह लंडन गए। उन्होंने वहां से हीरे खरीद कर सिन्ध भेजे। इन्हीं दिनों दूसरा महायुद्ध छिड़ गया। दादा भगवाज ने वापिस भारत आना था पर

11

आने जाने के सब रास्ते बन्द हो गये थे, ना हवाई जहाज से आना मुमकिन था और ना ही पानी के जहाज से ही आना मुमकिन था। सब जगह गोलाबारी चल रही थी।

दादा भगवान लंडन में फस गये। पराया देश था सबको अपनी सुरक्षा की पड़ी थी। कौन मदद करता? दादा भगवान बस की लाइन में खड़े थे - सिर्फ बस की टिकट के पैसे ही हाथ में थे। दादा भगवान को सोच हुई - "पता नहीं कितने दिन यहां और रहना पड़े? जगह का किराया तो एक तरफ, शाम को खाने के लिए भी पैसे नहीं है"

इतने में एक जना नजदीक आया दादा भगवान के कंधे पर हाथ रख कर बोला "मैं आपको पहचानता हूं। आप हीरों में सच्चे हैं। मुझे यहां हीरे खरीदने हैं। क्या आप मेरी मदद करेंगे? बदले में मैं आपको कमीशन दूंगा।

दादा भगवान अचम्भे में आ गये। जब निराकार को मेरी इतनी चिन्ता है तो मुझे अपनी चिन्ता करने की क्या जरूरत है? क्या नहीं घर तेरे॥ "मेरा साई सर्व समर्थ है"। और यह निश्चय दादा भगवान के आने वाले वक्त में बरकरार रहा। उसी शाम को दादा भगवान ने उसे, एक लाख के हीरे खरीद कर दिये और उसने कमीशन के दस हजार रूपये दादा भगवान को दे दिये। उस ईश्वर के करोड़ों हाथ हैं किसी भी रूप में आकर, वह अपने बन्दे की मदद करता है।

दादा भगवान के व्यवसायिक काल में एक ऐसा व्यक्ति दादा भगवान के संपर्क में आया जो बड़ी मुसीबत में था। दादा भगवान ने उसकी हर मुमकिन मदद की। और उसका डूबता कारोबार बच गया। वह बहुत एहसानमन्द हो गया 'आप ने सहायता नहीं की होती तो मेरे व्यापार का क्या होता? मेरे परिवार का क्या होता? आप का शुक्राना कैसे करूं? अपनी चमड़ी के जूते बनवा कर आप के पांवों में पहनाऊं तो भी कम है"।

कुछ वक्त गुजरा। समय ने पलटा खाया। सब दिन रहत ना एक समान। दादा भगवान की प्रकृति अचानक विपरीत हो गई। उस व्यक्ति को अवसर था जो अपने पराविन उपकारों का कर्ज उतार सकता था, पर उसने अपनी नज़रें फेर ली - कि-

दादा भगवान को जैसे पहचानता भी नहीं है। चमड़ी के जूते तो दूर उसने एक दमड़ी की भी मदद ना की। कोई कितनी जल्दी इतना एहसान फरामोश हो जाता है। दादा भगवान के मन में खिन्नता आ गई। "देखी दुनियादारी सब मतलब के यार, कोई नहीं मददगार"।

दादा भगवान का मन वैराग्य की ओर खिंचने लगा। उन्हें दौलत से और दौलत वालों से नफरत होने लगी। दौलत है क्या? दो लात।

आती है तो शान्ति भंग करती है
जाती है तो कमर चोट करती है॥

दादा भगवान को निश्चय हो गया कि दौलत पाकर मनुष्य कितना अंधा हो जाता है। साहूकार को ज्ञान लग ही नहीं सकता। साहूकारी का नशा तो जन्मों जन्मों तक रहता है।

साहूकारी को प्राप्त होकर मनुष्य आसुरी संपदा को प्राप्त हो जाता है।

Christ ने कहा है एक ऊँट का सुई के नाके में से गुजरना मुमकिन हो सकता है।

परन्तु एक साहूकार का स्वर्ग में प्रवेश पाना मुमकिन नहीं है।

# "आप सच्चे ब्रह्मज्ञानी हैं"

... और वह होटल में ठहरे हुए थे। साथ वाले कमरे में रामचन्द नाम का एक व्यापारी ठहरा था।
बाहर lawns में दोनों चाय पी रहे थे। अचानक रामचन्द बड़ खुश नज़र आया। पास वाली टेबिल पर PAUL BRUNTON बैठा था। रामचन्द ने उसे पहचान लिया था। Emotions में आकर दादा भगवान को बताने लगा "यह बड़ा मशहूर साहित्यकार है। इसने रमन्ना महर्षि का जीवन चरित्र लिखा है। दादा भगवान ने सब सुना पर, उनपर कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। वह सहज भाव से चाय पीते रहे।
रामचन्द के लिए वह लेखक जैसे आसमान से उतर कर आया खुदा था। उसके पास जाकर रामचन्द ने उस से autograph लिखवाया। Paul Brunton ने लिखा "You have come from heaven. You will go to heaven"
रामचन्द ने दादा भगवान से इसका अर्थ खोलने की request की। दादा भगवान ने समझाया तू भगवान से आया है। तू आत्मा है। Great born है, अज्ञान के कारण तू अपने को देह समझता है और अज्ञान के नाश हो जाने से एक दिन तू भगवान को ही प्राप्त होगा।
Paul Brunton दादा भगवान को observe कर रहा था। दादा भगवान ने जो अर्थ कहा, उसने सुना और प्रभावित हुआ। वह स्वयं उठकर दादा भगवान की टेबल पर आया, बातचीत का समय नहीं था। उसकी ट्रेन का वक्त हो गया था। उसने कहा "आपको मिल कर खुशी हुई है। ईश्वर ने चाहा तो दोबारा मुलाकात होगी" और वह चला गया।
[illegible] के खेल निराले। जिस ट्रेन से Paul Brunton जा रहा था दादा भगवान की reservation भी उसी ट्रेन और इत्तफाकन उसी डिब्बे में थी। दादा भगवान को देख कर वह हैरान हो गया। दोनों पुराने मित्रों की तरह मिले। सारी रात, ज्ञान का आदान प्रदान होता रहा। कुछ सीखा कुछ सिखाया — Paul Brunton ने कहा इन्डिया में कुछ बड़े साधु संन्यासियों और ज्ञानी ध्यानियों से

से मिलने का मौका मिला है। दादा भगवान ने कहा
"संन्यासी वह है जिसने अपने मन का नाश किया है,
और सच्चा ज्ञानी वह है जिसने अपने आप को जान लिया है।"
यह सुनकर Paul Brunton बड़ा खुश हुआ और उसने कहा
"साधारण वेष में आप एक सच्चे ब्रह्मज्ञानी हैं।"

बाद में चौदह वर्षों की मौन तपस्या के उपरान्त जब करुणा करके दादा भगवान ने अपने को प्रकट किया तो कहा था

"मैं तुम्हें तुम्हारी बोली में समझाता हूँ कि इस साधारण वेश में मैं पैगम्बर आया हूँ। तुम मुझे पहचानो। तुम मेरी बात का विश्वास क्यों नहीं करते हो।"

तभी एक चेली ने पूछा था 'दादा सच्चा ब्रह्मज्ञानी कौन होता है'?

दादा भगवान ने कहा 'सच्चा ब्रह्मज्ञानी दुख सुख में पहाड़ की तरह होता है।
मान अपमान में एक छोटे बालक की तरह होता है।
और ज्ञान सुनाने में एक बैरिस्टर की तरह होता है।
जो ब्रह्मज्ञानी गुरु मिले पूरा तो काम रहे ना अधूरा
फिर गुरु के ज्ञान से सब मुश्किल होये आसान।

4

15.

"I AM YOUR CHRIST"

दादा भगवान के जीवन की एक दिलचस्प घटना है। दादा भगवान पानी के जहाज से भारत लौट रहे थे। उसी जहाज से यहूदियों का एक group भी सफर कर रहा था। विदेशी सरकार ने इन यहूदियों का cash property सब कुछ जब्त करके इन्हें देश से निकाल दिया था।
सदियों पहले यहूदियों ने ईसामसीह को सूली पर चढाया था उस घोर पाप की सजा यह यहूदी कौम आज तक भुगत रही है। बाकी यात्री टीका टिपनी कर रहे थे, कुछ कह रहे थे, यह तो अन्याय है। करे कोई और भरे कोई! साथ में कुछ कह रहे थे ईश्वर के दरबार में सिर्फ न्याय है। यात्रियों के दो भिन्न मत थे। यहूदी आंखें बन्द किये गुमसुम बैठे थे। दुःख में प्रभु बहुत याद आता है - इसी से वह प्रार्थना कर रहे थे।
उनके मायूस चेहरे देख कर, दादा भगवान ने उनका दुःख बांटना चाहा। Sorrow shared is sorrow halved. दादा भगवान ने कहा 'आप किसी घोर चिन्ता में लगते हैं।'
यहूदियों को भीड़ में जैसे कोई अपना नजर आया उन्होंने दादा भगवान को सारा हाल बताया
उन्हें हिम्मत देने के लिए दादा भगवान ने कहा
"क्या आपको अपने ईश्वर पर विश्वास है कि वह आपको प्यार करता है? अगर वह प्यार करता है तो उससे जो कुछ भी होता है - ठीक होता है। THY WILL BE DONE OH LORD!"
यहूदियों ने कहा इस वक्त तो हमें यह चिन्ता है कि हम जहां जा रहे हैं, वहां हमारा अपना कोई भी नहीं है। अनजान शहर है। हम रहेंगे कहां! खायेंगे कहां? दादा भगवान ने उन्हें विश्वास दिलाया कि "ईश्वर को ही आप की चिन्ता है। आप चिन्ता नहीं करें। सिर्फ प्रार्थना करें सब ठीक ही होगा। जिसने दुनिया में भेजा है उसने सारा खेल पहले से ही बना कर रखा हुआ है। हाथी के लिए मन भर भोजन है, तो चींटी के मुंह में भी कौन डाल देता है?" दादा भगवान का उसूल था Always

Lend your Ear! Always wipe the tear।

वह कान देकर किसी के कष्ट सुनते और फिर प्यार देकर, ज्ञान देकर, उसके आंसू पोंछ देते।

दादा भगवान से, यहूदियों को प्यार मिला। उन्हें अपनेपन का अहसास हुआ और जो हालात सामने थे उनका सामना करने की हिम्मत मिली।

उन्होंने पूछा "आखिर आप हैं कौन?"

दादा भगवान ने कहा "मैं तुम्हारा क्राइस्ट हूँ" "I AM YOUR CHRIST"

इस जवाब की यहूदियों को उम्मीद नहीं थी। कोई साधारण व्यक्ति तो इतनी ऊंची बात कह ही नहीं सकता था। यह जरूर कोई रूहानी हस्ती है। उन्होंने एक दूसरे की आंखों में देखा और खामोश हो गये। बन्दरगाह आया और यहूदी वहां उतर गये। इस शहर में एक अत्यंत धनवान और अत्यन्त परोपकारी यहूदी रहता था। वह उदारचित्त भी बहुत था। उसको खबर मिल चुकी थी कि उसकी बिरादरी वाले बेघर होकर खाली हाथ आ रहे हैं। उसने सबके रहने का, खाने का इन्तजाम करके रखा था।

उन दिनों महायुद्ध छिड़ा हुआ था। हर चीज के दाम बहुत महंगे थे। इन यहूदियों ने रोजमर्रा के items बना कर, सस्ते दामों में बेचने शुरू किये। इससे अपनी मेहनत से, जल्दी ही अपने पैरों पर खड़े हो गये।

दादा भगवान के वचन सत्य हुए जो उन्होंने यहूदियों को कहे थे। "तेरी रोजी रोटी तुझे ढूंढे। तू दिल विच कर आराम!"

कुछ समय उपरान्त दादा भगवान ने अपने व्यापार के सिलसिले में, इस शहर में आये। यहां उन्होंने उनको पहचान लिया। यह वह जहाज वाला – हमारा क्राइस्ट है खबर सारे शहर में फैल गई। यहूदियों ने दादा भगवान को रथ पर बिठा कर शहर की गली गली में से सवारी निकाली।

ब्रह्मज्ञानी के मुख से निकले प्रेम के, ज्ञान के वचनों में इतनी ताकत होती है जो मुर्दे में नई जान डाल देते हैं।

किसी के काम जो आये, उसे इन्सान कहते हैं
पराया दर्द जो अपनाये, उसे भगवान कहते हैं॥

## समय ने पलटा खाया

लंदन office में टी.एम. के manager ने दिवाला निकाल दिया। तब दादा भगवान की उम्र चालीस वर्ष की थी। दादा भगवान का सारा व्यापार, मटिया मेट हो गया।

दादा भगवान के अन्दर खोज शुरू हो गई। माया क्या है? दादा भगवान के शब्दों में "जब तक माया प्राप्त नहीं होती इन्सान को चैन नहीं, और जब चली जाती है तो double बेचैनी देकर जाती है। माया में एक सुख है तो सौ दुख हैं। यह जानते हुए भी कि माया दुखो की खान है, फिर भी सभी को माया चाहिए। यह तो किसी की भी सगी नहीं है। फिर मनुष्य किस बात का अहंकार करता है?

माया से ही सब दोस्ती है सब रिश्तेदारी है। माया के छोड़ जाने से दोस्त और रिश्तेदार भी साथ छोड़ देते हैं" यह आखिर बात का खुद दादा भगवान को कड़वा अनुभव मिला था। इसी से उन्हें जगत से और जगत के लोगों से रुखाई आ गई। दादा भगवान अपने साथ एकान्त में बैठकर घन्टों विचार करते रहते दुख सुख क्या है? दुखो से बचाव किस प्रकार किया जाये? दुख सुख शरीर से है तो शरीर से ऊपर कैसे हुआ जाये? दुखो सहित इस शरीर को कैसे भुलाया जाये? इन प्रश्नों के उत्तर दादा भगवान अपने भीतर से खोजते, पर राहत नहीं मिल रही थी। दीया तैयार था, सिर्फ तीली का स्पर्श बाकी था। वह स्वयं रौशन दीया कौन है जो इस दीए को रौशन कर दे। वह कहां है? वह जल्दी सामने आये। यह लगन और यह जगन ने दादा भगवान में गुरु की खोज शुरू कर दी॥ कहते हैं सच्चे जिस दिशा से भी आशा की किरण नज़र आती है मन उसी ओर डुलने लगता है।

नक्षत्रों का प्रकोप दूर करने के लिए पण्डितों से उपाय पूछे जाते। परिवार वाले देवी देवताओं को प्रसन्न करने के लिए मंदिरों में प्रसाद चढ़ाते। कुछ भोज कराते। आरतियां उतारी घर पर ज्योतिषियों को बुला कर सबके हाथ दिखवायें जाते थे एक ज्योतिषी आया उसने जब दादा भगवान का हाथ देखा तो कहा इस हाथ में राजाई लिखी है। दादा भगवान ने कहा "राजाई तो लिखी है। मिली

om

8 हमारे आदरणीय और पूजनीय दादा भ० के जीवन की सबसे बड़ी घटना थी उनका ब्रह्मज्ञान में आना। जैसे-जैसे दादा भ० ज्ञान में डूबते गए, वैसे-वैसे उनका अभ्यास वैराग्य सघन होता गया।



भी थी पर अब सब समाप्त हो गई है।"

ज्योतिषी अपनी बात पर अड़ा रहा। उसने फिर कहा "इसमें राजाई तो लिखी है"

वास्तव में ज्योतिषी का कहना सच था। दादा भगवान को उत्तम- सच्ची- रूहानी राजाई प्राप्त होनी थी। माया तो आनी जानी है, असली दौलत ज्ञान है जिसे प्राप्त हो कर दादा भगवान मायापति बन गये। राजाओं के भी राजा बन गये।

(दादा भगवान ने माया के दोनों रूप देख लिए थे। अत्यन्त सम्पदा और धन से खरीदे जाने वाले सब ऐश्वर्य उन्हें प्राप्त थे। और दूसरे रूप के दौर में से दादा भगवान अब गुज़र रहे थे कि बिना माया के भी जीया जा सकता है। एक बार एक प्रेमी भक्त को पत्र में दादा भगवान ने कहा

"जैसे जैसे problems आयेंगी - वैसे वैसे तुझे अनुभव मिलते रहेंगे। जिसने बहुत कमाया है - उसे गंवाने का भी अनुभव मिलना चाहिए कि माया कैसे आती है और कैसे जाती है। सब स्कूल की तरह है। परीक्षा देने के सिवाय क्लास ऊपर नहीं चढ़ेगी। शल परीक्षा में pass होते रहो।"

दादा भगवान जो भी कहते - अपने अनुभव को ज्ञान के साथ जोड़ कर कहते। तभी उनका हर एक शब्द सामने वाले को रामबाण की तरह फिट हो जाता था।)

दादा भगवान ने घर पर बोल रखा था कि मेरे लिए खाना नहीं बनाना। सच बात तो यह थी कि अब घर में किसी को दादा भगवान की फिक्र ही नहीं थी। वह आयें या ना आयें - खायें या ना खायें। परिवार के लिए दादा भगवान एक अजनबी जैसे थे।

दादा भगवान घर पर late ही आते। भोजन बच गया होता तो वह खा लेते, नहीं तो उनका फाका हो जाता था। दादा भगवान का घर पर रहना, ना रहना एक बराबर था। वह एक दरवाजे से अन्दर आते, और दूसरे दरवाजे से बाहर चले जाते। घर वालों से उनका एक शब्द का भी व्यवहार नहीं था। चार बेटे को चार कमरे देकर खुद flat के बाहर की gallery में छोटा सा पलंग

डाल कर सो जाते थे।

बरसात के दिनों में raincoat से या plastic की शीट से गुजारा कर लेते थे। अपने कपड़ों को गोल करके सिर के नीचे रख लेते तो तकिया का काम हो जाता। अपने शरीर के लिए, कुछ भी खर्च करना, उन्हें गवारा ना था। Shirt का collar कट जाता तो उलटा कर, सी करके काम चला लेते थे।

(दादा भगवान के लिए यह कैसे दिन आ गये थे। एक वह दिन थे, जब जेबें और wallets पैसों से भरे रहते थे और अब ऐसी स्थिति थी कि बस की टिकट के पैसे ना होने से दादा भगवान को निष्काम निमित्त पैदल जाना पड़ता था। कमाल है जो दादा भगवान के चेहरे पर कभी शिकन नहीं आई और जुबान पर कभी शिकायत नहीं आई।)

दादा भगवान का अधिकतर समय निष्काम सेवा में गुजरने लगा। उनके सारे दिन की दिनचर्या निष्काम प्रेम करना था। इससे उन्हें आन्तरिक आनन्द का अनुभव मिला। दादा भगवान कहते "असली आनन्द भोगों में नहीं है। तुम अपने सुख छोड़ो। अपने लिए तो पशु पक्षी भी जीते हैं। तुम दूसरों के लिए जीओ। जिन्हें तुम्हारी जरूरत है - जो बीमार हैं तुम उनके लिए हाज़िर होकर रहो। उनके लिए नर्स होकर रहो।"

दादा भगवान का घर से बाहर रहना घर वालों को पसन्द नहीं था और ना ही किसी का घर पर आना और दादा भगवान से मिलना ही उन्हें पसन्द था। घर वाले दादा भगवान की हर बात में विरोध करते पर दादा भगवान पर इसका कोई असर नहीं होता था। दादा भगवान की निष्कामता का यज्ञ चलता रहता था।

महंगी से महंगी, अच्छी से अच्छी चीज, वह योगियों को खिला देते थे। इसी से कई बार घर में शोर हो जाता। फ्रिज़ में fruit रखा था। कहां गया? Dry fruit रखा था। कहां गया? जब दादा भगवान से पूछा जाता तो दादा भगवान कहते "दाने दाने पर लिखा है, खाने वाले का नाम। जिस के हक का था उसने खा लिया है।"

एक बार Cake पड़ा था, योगी आये और दादा भगवान ने बड़े प्यार से उन्हें खिला दिया। उस दिन घर पर बहुत बड़ा हंगामा हो गया।

एक बार कल्याण के योगी आये, कुदरत की बात थी, उनमें से एक के पांव में नुक्स था तो लंगड़ा कर चल रही थी। एक की एक आंख खराब थी, कोई मोटी, कोई काली। दादा भगवान के लिए सबके सब "मेरी मिठी प्यारी आत्मा" थे। सब भगवान के ही रूप थे। दादा भगवान ने ऊपर से चान्दी के बर्तन निकाले, जो केवल FORMAL FUNCTIONS पर ही निकाले जाते थे। दादा भगवान ने बड़े आदर से, बड़े प्यार से अपने योगियों को इन चान्दी के बर्तनों में खिलाया। योगियों के जाने के बाद घर पर इतना हंगामा हुआ। "जो हाथ पर रोटी खाते हैं, उनके लिए चान्दी के बर्तन निकालने की क्या जरूरत थी। यह भांति भांति के नमूने इनके योगी हैं।" वह कहते मुझको पागल, मैं कहता उनको पागल। दादा भगवान के लिए LOVE ALL ALIKE था। घरवाले समझ ही नहीं सकते थे। दादा भगवान का दिल कितना विशाल है? दादा भगवान कितने अद्भुत में हैं।

गीता में कृष्ण कहते हैं जहां जगत वाले सोते हैं वहां मैं जागता हूँ। सचमुच ज्ञान के बिना मनुष्य खुली आंखों से भी नींद में है। सपने में है।

दादा भगवान के शब्द हैं "तुझे प्रेम करने का मौका मिला है। तुम उदारचित बनो।"

दादा भगवान का ऐसा निष्काम रहना देखकर घरवालों ने होशियारी की। सब कुछ अपने नामों पर transfer कर लिया। दादा भगवान के नाम पर एक कौड़ी भी नहीं थी।)

घरवालों को डर था, दादा भगवान के पास जो कुछ रहेगा वह अपने योगियों पर लुटा देंगे।

"बिना कौड़ी भी दादा भगवान बादशाह ही थे" वह कहते दान करो। तुम प्रेम के सिक्के दान करो।

पाई पैसा की नहीं, सभी को प्रेम की जरूरत है। एक बार एक योगी ने कहा दादा आप को आप के घर वालों का रूखा व्यवहार अखरता नहीं है?

दादा भगवान ने कहा मेरा नाम मगन है। ऐसी से मैं अपने आप में ही मगन रहता हूँ।

एक बार दादा भगवान घर के लिए भाजी खरीद कर ला रहे थे
रास्ते में एक योगी मिल गई। उसने सहज में पूछ लिया "दादा
आज इतनी भाजी खरीदी है?" दादा भगवान ने उसी सहजता में
जवाब दिया "तेरे लिए खरीदी है"। दादा भगवान ने सारी भाजी
उसे दे दी। उसमें से एक लौकी लेकर घर आ गये। नानक इसी
को सच्चा सौदा कहते हैं।

दादा भगवान के एक बड़े भाई थे। अकेले थे। दादा भगवान के
परिवार में साथ ही रहते थे। वही सारे परिवार को देखते, संभालते
थे। इसी से सभी उनका आदर करते थे और घर के असली
मालिक, दादा भगवान को तो घर का नौकर भी तीखा जवाब दे
देता था। उसको घर वालों की शह मिलती थी। दादा भगवान को
अपने लिए किसी की सेवा लेनी पसन्द नहीं थी। एक दिन कुछ जरूरत
थी। नौकर को नीचे से लेकर आने को कहा। नौकर ने सीधा
स्पष्ट कह दिया "मुझे फुर्सत नहीं है"। इस पर भी दादा भगवान
ने अपना मौन नहीं टूटने दिया। उनमें इतना धीरज होता था कि
ऐसी परिस्थितियों में वह केवल मुस्कुरा देते थे।
(दादा भगवान के लिए मान अपमान कुछ मायने नहीं रखता था।
वह कहते "जो उल्टा है वह उल्टा ही रहेगा। तुम कुछ कहो नहीं
तुम उस मौज को मार दो !! बस")
जगत के रंग ढंग देखकर दादा भगवान अपने से हँसते।
"यह माया, सारे जगत को भरमा कर कठपुतली की तरह नचा
रही है — माया से मिलता क्या है? लोग दुखी होकर मरते हैं।
कई साहूकार अपने को pistol लगाकर आत्म घात करते हैं। कई
माया के खातिर गलत कर्म बनाकर, जेल जाते हैं।
माया के सब सुख जहरीले हैं --- माया नागिन है -- जिसने
सबको डस कर रखा है" --
(दादा भगवान वैराग्य में आ गये थे। उन्हें निश्चय हो
गया कि जगत के सभी आधार झूठे हैं। एक ही सच्चा/आधार
गुरु का है।) और अब उन्हें सच्चे गुरु की तलाश थी। उन दिनों
शहर में सतगुर गर्ग थे जिसकी चर्चा हर जुबान पर थी।
महंगी गाडीयों में घूमने वाले दादा अब मस्ताने फकीर
की तरह रहने लगे। महलों गाडीयों से निकलकर
घर घर में ज्ञान की ज्योत जलाने लगे।

एक सच्चे ब्रह्मज्ञानी सन्त आये हुए है। उनकी आवाज मे और उनकी वाणी मे जादु है।

सभी को उत्सुकता थी। यह सन्त के दर्शन होवे। उनके वचन सुने परन्तु उन तक पहुँच पाना कठिन था। वह सबसे मिलते ही नहीं थे। कोई चुन चुन कर उनको सुन पाता।

दादा भगवान के भीतर तीव्र प्रेरणा आई "मुझे इस ब्रह्मज्ञानी सन्त से मिलना है। और हर हालत मे मिलना ही है"

दादा भगवान की सच्चाई थी, जो संकल्प पूरा हुआ।

दादा भगवान की भेंट हो गई (दादा भगवान कहते है "यह मेरी जिन्दगी का सबसे ज्यादा खुशी का दिन था अजु खुली मुहिजी लाटरी")

दादा भगवान कहते थे 'मनुष्य समझता है शादी होवे तो तृप्ति आये दिल तो दिलबर के रहने की जगह है। वहां गुरु को बिठाओ तो तृप्ति आये। गुरु ऐसा Surgeon doctor है जो ऐसी dose देता है जो कोई रोगी भी अरोगी हो जाये और कोई भोगी भी योगी हो जाये।

उसकी dose से सब बीमारी चली जाती है और सब आपदा टल जाती है।

कोई पतित भी आये तो वह पावन हो जाता है।

कोई मन मुख भी सनमुख बैठ तो गुरु मुख हो जाता है

दादा भगवान की सूझ वाली नजर ने फैसला बता दिया था। "यह एक सच्चे ब्रह्मज्ञानी है। इससे दादा भगवान के मन बुद्धि ने भी फैसला ले लिया कि "यही है वह रोशन मशाल जो इस मशाल को रोशन करेगी"।

5 मिल गया जो मिलना था, काम क्या बाकी रहा ।

"WHEN DISCIPLE IS READY THE GURU IS THERE"

भगवान लालजी साईं से पहली भेंट में ही दादा भगवान को लगा 'तू मेरा !! तू मेरा ।

दादा भगवान के शब्दों में 'मिल गया, जो मिलना था, काम क्या बाकी रहा ।' दादा भगवान की खोज पूरी हुई । 'जिस मिलिए आनन्द होय । सो सतगुरु कहिए' दादा भगवान आनन्द में आ गए। दादा भगवान के शब्दों में 'जगत के बदले में सच्चा गुरु पाकर, मुझे कम नहीं लगी है ।

यह रस जिसने चखा है स्वाद केवल वही जानता है। सन्त कहते है 'सीस दिए जो हरि मिले, तो भी सस्ता जान। जिसे सच्चा गुरु लाधा' उस सुख के मुकाबिले बाकी सब सुख तुच्छ है। जिसे सच्चा गुरु मिल गया, गुरु का ज्ञान मिल गया। उसे जीवन में सब कुछ मिल गया है और 'जो इक तू ना मिले, सारी दुनियां मिले तो भी, Zero है।

दादा भगवान अपने गुरु का चेहरा निहारते तो उनके दर्शनों में ही तल्लीन हो जाते। उनके शब्द हैं

"देख कर सतगुरु का मुखड़ा - मिट जाता दिल का दुखड़ा
✓ मिल जाता है सब सुखड़ा ।"

दादा भगवान यह लाइनें बार बार कहते, जिससे सब सुनें, इस बात को मानें और सच्चा आनन्द जानें।

दादा भगवान ने, अपने गुरु का लगातार एक वर्ष संग किया "सत्संग और ज्ञान । ज्ञान और सत्संग । यही दिन चर्या रही । दीन और दुनियां भूल कर दादा भगवान अपने सद्गुरु के चरणों से लगे रहे।

प्रश्न उत्तर करके दादा भगवान के सारे संशय भरम नष्ट हो गये थे। लाल जी साईं ने दादा भगवान को परागत पाया तो उन्हें ब्रह्मज्ञान की पूंजी देकर अमर समाधि ले ली। जैसे तोतापुरी ने राम[illegible] को कहा "मेरे पास सिर्फ चार दिन है। तुम्हें ब्रह्मज्ञान देता हूँ।

जिस दिन दादा भगवान की भेंट लाल जी साईं से हुई, उसी

दिन से ही दादा भगवान की खुमारी - नानका चढ़ी रहे दिन रात।
दादा भगवान मस्ती में ही रहने लगे थे।
दादा भगवान जब तक अपने गुरु से मिल नहीं लेते थे उन्हें चैन नहीं आता था।
एक दिन वह भगवान लालजी साईं से मिलने जा रहे थे। एक दोस्त ने साथ चलने का आग्रह किया, तो दादा भगवान, उसे अपने साथ ले गये।

अपने दिलबर की नजरों के सामने, उनके चरणों में बैठे - दादा भगवान असीम आनन्द में थे।

"मौज पई अचे - साईं मौज पई अचें" संस्कार अपने अपने होते हैं। उनका दोस्त बैठे बैठे ऊब गया था।

वह बार बार इशारे करने लगा 'उठो। अब चलते हैं।
उठो, अब चलते हैं।

दादा भगवान को अपना मन मार कर उठना पड़ा। दादा भगवान ने उसी दिन संकल्प किया

सन्त दर्शन जाइये तो साथ ना लीजे कोय'

यही बात विवेकानन्द जी के साथ घटित हुई थी। वह सुबह रोज अपने गुरु रामकृष्ण के साथ सैर करने जाते थे। एक दिन दोस्त के आग्रह करने से उसे साथ ले आये। दोस्त की इच्छा थी। वह भगवान रामकृष्ण से बात करे। रास्ते भर उसके अन्दर चलता रहा "कैसे बात शुरू करे? कौन सी बात करे? पर उसे मौका नहीं मिल रहा था। सैर खत्म हुई तो तीनों जने घाटी पर खड़े हो गये। अभी पौ फटी थी, आकाश में लालिमा थी - सूर्य उदय हो रहा था। उस व्यक्ति ने अपना मौन तोड़ा - कहा "कितना सुन्दर नजारा है! उस पर रामकृष्ण ने उसे इतना डांटा, गाली दी और साथ में विवेकानन्द को भी दी "यह जिज्ञासु नहीं है तो किस अधिकार आया है? इसने मुंह अब खोला है पर सारा रास्ता इसका मन बकबक ही करता रहा है"।

"उस दिन विवेकानन्द ने बिल्कुल वही संकल्प किया था जो दादा भगवान ने किया।

गुरु को मिलने जाओ तो साथ में किसी को लेकर नहीं चलो।

जिज्ञासु को सच्चा गुरु चाहिए तो गुरु को भी सच्चा जिज्ञासु ही चाहिए। ताकि जहां गुरु ने यज्ञ छोड़ा है, वहीं से शिष्य आगे बढ़े और गुरु का बाकि का काम पूरा करे। गुरु जितनों को जगाता है अब इन पर बात आ जाती है कि यह आगे कितनों को जगाते।

बाबा नानक ने थाल सजा कर, लहणा की आरती उतारी थी कि 'कि तू ही है जिसने मुझे पहचाना है"।

भगवान लालजी साईं की नजर में दादा भगवान खरे पात्र थे ब्रह्मज्ञान के अधिकारी थे - इसी से, उन्होंने अपने ज्ञान का वारिस दादा भगवान को चुन लिया।

"जो तेरा सो मेरा, जो मेरा सो तेरा' और यह contract निभा दिया। दादा भगवान जी के शब्दों मे

"असली दौलत ज्ञान है। धन का दिवाला निकल सकता है पर ज्ञान का दिवाला कभी नहीं निकल सकता"

इस असली दौलत को प्राप्त होकर दादा भगवान माला माल हो गये। यह ऐसा खजाना था - मीरा कहती है

"चोर ना लूटे - खर्चे ना खूटे" और ज्यों ज्यों खर्च होता है यह बढ़ता जाता है - दिन दिन होत सवायो॥

दादा भगवान का अपने सद्गुरु को TOTAL CHEERFUL, UNCONDITIONAL SURRENDER था। सच्चे समर्पण में कोई शर्त नहीं होती। कोई इच्छा नहीं होती। लालजी साईं कहते रात है तो दादा भगवान कहते रात है। वह कहते दिन है, तो दादा भगवान कहते दिन है। 'सागर का पानी मीठा' तो जो सच्चा जिज्ञासु है, कहता है जी हां। गुरु कहे 'बीस में से पन्द्रह गये बाकी बचे दस' तो जिज्ञासु कहता है 'हां जी हां'। वह अपना मन बीच में नहीं चलाता।

दादा भगवान कहते हैं "मैं जगत में होशियार था। अब गुरु के पास आकर ज्ञान में भी होशियार था क्योंकि मैंने अपनी बुद्धि गुरु को अर्पण कर दी थी। इससे दादा भगवान की न तो अपनी [illegible] रही और ना ही अपनी [illegible] रही थी।

एक बार कृष्ण ने अर्जुन से कहा 'देखो अर्जुन! उस वृक्ष की शाखा पर जो पक्षी बैठा है। कौआ ही है ना। काले रंग

का है" अर्जुन ने ध्यान से देखा और कहा "जी हां। कौआ ही है! काले रंग का है"।

कृष्ण ने कहा "नहीं अर्जुन। वह सफेद रंग का है। कबूतर है" अर्जुन ने बड़े ध्यान से देख कर कहा "जी हां। सफेद रंग का है। कबूतर ही है"। और कृष्ण मुस्कुरा दिये थे। सच्चे भक्त को अपनी इन्द्रियों से ज्यादा अपने गुरु के वचनों पर विश्वास होता है।

एक दिन दादा भगवान ने भगवान लालजी साईं से कहा "आप कोई वचन दीजिए"

लालजी साईं ने कहा "तुम कुछ बनो नहीं"।

इस सुन्दर संक्षिप्त वाक्य को गुरु मन्त्र समझ कर दादा भगवान ने इसे अपने दामन में बान्ध लिया जो दादा भगवान के ज्ञान की नींव शिला बन गया।

BE NOTHING ! DO NOTHING !

दादा भगवान कहते "दुनिया में सबको बनने की इच्छा है। तुम्हें मिटने की होवे" गुरु मन्त्र ने दादा भगवान को नये सांचे में ढाल दिया। दादा भगवान ने कहा

"गुरु मुख से मेरा नया जन्म हुआ है" अब अपने PAST को अपने पुराने जन्म को कौन याद करे"

दादा भगवान का इश्क अपने गुरु से ऐसा हो गया कि लागी छूटे ना। दादा भगवान को गुरु ही सारा टाइम याद रहता था, तो जगत आपे ही पीछे होता गया।

दादा भगवान को अपना गुरु प्यारा था। इसी से गुरु का हर वचन भी प्यारा था। गुरु के वचन पर दादा भगवान भजन बना कर भगवान लालजी साईं को सुनाने जाते। दादा भगवान की आवाज़ में सोज़ था, सुर था और जब वह भाव में आकर गाते थे तो संगत सुध बुध भूल कर प्रेम में झूमने लगती।

लालजी साईं ने जान लिया - दादा भगवान ने साथ में प्रेम और भक्ति जोड़कर उस ज्ञान को चार चान्द लगा दिये थे।

भगवान लाल जी साईं बाकी सब भक्तों को कहते

"तुम्हारा मुंह जलता है जो तुम गुरु की महिमा और स्तुति नहीं करते। भगवान जी कहते हैं

"जो गुरु की स्तुति नहीं करते हमारा मन होता है उनको

गुरु की स्तुति होवे या ना होवे, इससे गुरु को कुछ फर्क नहीं पड़ता।

लालजी साईं के पास, कुल छत्तीस योगी होते थे। एक दिन लालजी साईं ने, दरवाजा बन्द कर दिया और कहा "जो शीश दे वह ईश पाये"। बैठे बैठे सभी प्रेमियों का धीरज टूट गया। एक एक, करके 30 गये। दादा भगवान, वहीं दरवाजे के बाहर श्रद्धा में, टिक कर बैठे रहे। लेहणा ने कहा था "मेरा गुरु कहे, तो मैं अपनी सारी जिन्दगी घड़े तोड़ने और बनाने में गुजार दूं"। श्रद्धा में जो आयेगा। आनन्द वही पायेगा।

प्रसन्न होकर लालजी साईं ने कहा "जैसी श्रद्धा और भक्ति से, तू मुझे झुका है। सारी दुनिया तुझे झुकेगी"।

गुरु वाक्यम् सत्यम्। गुरु का आशीर्वाद सच हुआ। उस ज्योतिषी की भविष्य वाणी भी सच साबित हुई जिसने कहा था "इस हाथ में राजाई लिखी है"।

ज्ञान लेकर दादा भगवान चौदह वर्षों तक अपनी आत्मा में मौन रहे। अपने परिवार के साथ उसी छत के नीचे रहते हुए भी वह असंग थे। पूरे निर्लिप नारायण थे। ना कुछ लेना, ना कुछ देना। दादा भगवान अपनी आत्मा में मगन रहते। सारा वक्त, वह अपने से विचार करते और अपने गुरु के वचनों का भजन चिन्तन करते रहते। यदि कोई आकर सामने बैठता, या कुछ पूछता दादा भगवान संक्षिप्त में बात करके पुनः अपने में स्थित हो जाते थे। सारे जगत से उन्हे बेखबरी थी।

बाद में जब उनसे कोई पूछता था, 'दादा। ज्ञान लेकर आप चौदह साल मौन में क्यों चले गये थे? तो वह मुस्कुरा कर कहते "मुझे पिछले चौदह दिन की, चौदह मिनटों की बात याद नहीं - चौदह साल पीछे की बात कैसे याद करूं?"

इन चौदह वर्षों के तप के बाद दादा भगवान जब प्रगट हुए तो अपनी आत्मा में आकर, 'भगवान' हो गये थे। और तब हर घट में उन्हें, भगवान ही नजर आया।

सज की घड़ी सु भागी,
मेरी साँई हुई सुलैन भागी

एक योगी ने कहा 'दादा आप को आप के घर वालों का रूखा व्यवहार अखरता नहीं है?

दादा, भगवान ने कहा 'मेरा नाम मंथन है। इसी से मैं अपने आप में ही मगन रहता हूँ।

दादा भगवान योगियों को कहते

'तुम अपने सारे दुःख मुझे भेज दो उनकी शान्ति और आनन्द देखो बार जिज्ञासु कहते 'दादा! मुझे भी आप की तरह होना है तो दादा भगवान कहते 'कोई जन्म से ज्ञानी बन कर पैदा नहीं होता। उसका अपना पुरुषार्थ और तपस्या फलीभूत होती है। हमने किया है तुम भी कर सकते हो। मेरे मंथन और भुवन न होवें। यह मुमकिन नहीं है। और दादा भगवान बताते थे कि पहले पहले हम कहते "माँ बाप ने नाम रख कर मुसीबत कर दी है जो मंथन नाम भूलता ही नहीं है।" "अब तो खोजता हूँ तो भी नहीं मिलता मैं हूँ कहाँ?"

दादा भगवान हमेशा कहते थे "अपने इस मन से खबरदार रहना, यह नीच मन किसी को भी नहीं छोड़ता यह तो गुरु पर भी शक करके पाप कर्म बना लेता है।"

और दादा भगवान, इस मन के दुष्ट कर्म सबके सामने खोल कर बताते थे।

एक बार दादा भगवान, अपने गुरु के पास आये, सीढ़ियों में उन्हें पाला नाम की लड़की मिली जो, लाल जी साईं को मिल कर आई। दादा भगवान ने अपने गुरु से पूछा "पाला आई थी?" लाल साईं ने बेध्यानी में कहा "कौन पाला?" दादा भगवान को शक हो गया कि गुरु ने 'पाला आई थी' यह बात क्यों छिपाई है?

बाद में जब अपने साथ बैठ कर विचार किया तो दादा भगवान बहुत पछताये कि ब्रह्मज्ञानी तो सब में अपना आप ही देखता है। ब्रह्मज्ञानी के लिए नाम रूप नहीं है।

दादा भगवान अपने इस दुष्ट मन का दूसरा दुष्ट कर्म बताते थे। एक बार लालजी साईं ने वाणी में कहा "तुम्हारा तन मन इत्यादि गुरु का है। जब तक तुम इसे खुशी से गुरु को अर्पण नहीं कर देते - तुम्हें ज्ञान नहीं लगेगा।" दादा भगवान कहते "इस नीच मन की यह नीच हरकत थी कि उसने अपने गुरु पर दोबारा शक किया। गुरु धन की बात करता है।"

गुरु को धन चाहिए

दादा भगवान के भीतर यह शंका उठी ही थी, कि उसी समय भगवान लाल जी साईं ने गरज कर कहा, "तुम्हारे अन्दर पाप है। तभी तुम्हारा मन शंका करता है।" दादा भगवान हिल गये। गुरु के पास X-RAY नज़र है। अन्दर का भेद पढ़ लिया। उसी वक्त दादा भगवान को दृढ़ निश्चय हो गया। मेरा गुरु सच्चा है। उनका हृदय आनन्द से भर गया। दादा भगवान को सच्चे सतगुरु की तलाश थी और वह प्राप्त हो गया।

"मुहिंजे आंगन आयो रहबर फ़ारो
मुहिंजी किस्मत जा खुली वयो सितारो
मुखे सतगुरु मिलयो कुर्ब वारो।"

सारा दिन दादा भगवान के मुख में गुरु की महिमा और गुरु के शुकराने रहते। वह कहते "आज तक यह मन ही था जो मुझे मेरे गुरु से दूर किये था, इसका सरल सीधा उपाय वह बताते मन देवे सतगुरु के पास"

जो बिसरवा दादा भगवान ने खुद आजमाया था और लाभ प्राप्त हुई थी। वह चाहते थे इधर उधर भटक कर, तुम अपना वक्त और शक्ति बरबाद ना करके सीधे रास्ते पर आ जाओ। "मन मारन की औषधि सतगुरु देत बताय", वह कहते "तुम वही काम करो - वही बात करो जो तुम्हारे गुरु को पसन्द है।"

दादा भगवान ने मुड़ कर, मिट कर, गा कर, मर कर हर तरीका आज़मा कर, अपने गुरु की पसन्दी का बन कर, गुरु को रिझा लिया था। दादा भगवान कहते "गुरु रिझे तो बेड़ा पार है। गुरु तुम्हारी श्रद्धा देखता है। उसे और कुछ नहीं चाहिए। तुम श्रद्धा से गुरु को रिझाओ।"

तुम गुरु को समझो - गुरु को पाओ
गुरु के साथ मिल कर, गुरु का रूप हो जाओ।
मुश्किल [illegible] नहीं है। गुरु तो पुकार पुकार कर बुला रहा है - देर तुम्हारी अपनी है।

"आओ मेरी नैया में ले जाऊंगा भव पार
आओ मेरी नैया में ले जाऊंगा भव पार ॥"

॥ ॥

6

## "ब्रह्मज्ञानी का निश्चय और आदर्श"

दादा भगवान से कोई पूछता "दादा आज की ताज़ा खबर क्या है?"
दादा भगवान कहते "तू भगवान है"
एक ने पूछा "दादा! बताओ! मेरी मुट्ठी में क्या है?"
दादा भगवान ने कहा "मैं ही तो हूँ आत्मा ही तो है"
एक ने पूछा "दादा! आज आप क्या खायेंगे?"
दादा भगवान ने कहा "आज हम तुम्हारा EGO खायेंगे"

दादा भगवान का हर वचन ज्ञान का और अद्वैत का होता था, जिस पर सामने वाला विचार करने लगता कि इस में ज़रूर छिपा कोई गहरा अर्थ है तो, वह उस अर्थ की खोज में लग जाता।

एक बार दादा भगवान Bathroom में थे।
किसी ने खटखटा कर पूछा "अन्दर कौन है?"
अन्दर से जवाब आया "तू ही तो है"
वह योगी हँस पड़ा और समझ गया कि दादा के सिवा यह अद्वैत का शब्द और कौन देगा?

दादा भगवान ने सारी उम्र आत्मा को जाना। आत्मा आत्मा ही कहा - आत्मा में ही वास किया था। अपनी जीवन यात्रा के अन्तिम दिन भगवान दादा लक्ष्मी ने कहा "दादा किधर हो?" दादा भगवान ने कहा
"मैं तुझमें समाया हूँ। तू मुझमें है।"

यह है सच्चे ब्रह्मज्ञानी का सच्चा निश्चय। दादा भगवान को कोई मिलता और कहता "दादा राम राम" दादा भगवान कहते "राम ही राम। है ही राम"

राम के सिवाय तो कुछ बना ही नहीं है।
जड़ चेतन में चोर चण्डाल में, दोस्त दुश्मन में दादा भगवान को केवल ब्रह्म ही ब्रह्म प्रतीत होता।
दादा भगवान जड़ - जैसे, प्लेट चम्मच, चिमटी को उठाते तो इतने प्यार और एहतियात से कि, जैसे उसे ठोकर ना लगे, कहीं कष्ट ना पहुँचे।

दादा भगवान कहते
तुम जड़ चेतन की आसीस लो तो तुम्हें - ज्ञान जल्दी लगेगा।

एक बार दादा भगवान को एक जना मिलने आया "मैं अन्दर आ सकता हूँ ?" उसने पूछा तमीज से पर अन्दर आते हुए दरवाजा जोर से मारा। अपना चप्पल को लापरवाही से उतारा। दादा भगवान ने कहा "जाओ। पहले दरवाजे को प्यार करो और चप्पल को भी प्यार करो" और फिर धीरज से आओ। दादा भगवान ईश्वर की हर रजा में राजी थे। "जिये भगवान हलाये ते सुणे आहे" दादा भगवान कहते "समझो तुम्हें बारिश नहीं चाहिए। बारिश आ जाये तो तुम कहोगे जैसी भगवान की इच्छा। ठीक है। इसमें तुम्हारी मजबूरी छलकती है। तुम कहो "मेरी अपनी भी यही रजा है कि बारिश आये।" दादा भगवान ने आगे कहा "समझो तेरा एक ही बेटा है। वह मर जाये तो तुम कहो "अच्छा हुआ। मर गया। मेरी अपनी भी यही रजा है। तो मैं समझूंगा - तुम्हें ज्ञान लगा है"। जो श्रीराम का निश्चय था वही दादा भगवान का निश्चय था। "तेरी आँख चली जाये तो तू भगवान का शुक्राना कर कि शुकर है, एक आँख तो है"

दादा भगवान जगत को दूषण नहीं, भूषण करके देखते थे। दादा भगवान के पास एक प्रेमी भक्त आया "दादा। आपको बताने आया हूँ - मुझे lottery का पहला इनाम आया है! मुझे एक लाख रुपया मिला है" दादा भगवान ने उसे जताया जैसे वह उसकी खुशी में शरीक हुए हैं। उसके जाने के बाद दादा भगवान ने कहा यह खुश हो रहा है कि इसे लाटरी लगी है। अब यह मूर्ख अपने भगवान से दूर हो गया है "मिली दौलत तो विसरया करतार" दादा भगवान कहते "साहूकार को ज्ञान नहीं लग सकता साहूकार को ज्ञान चाहिए तो पहले गुरु से गरीबी खरीद करो। buy poverty from Guru

जो सचमुच के गरीब हैं वह कहते "अच्छा है जो हमें गरीबी की सौगात मिली है। जिस से साक्षात ब्रह्मज्ञानी भगवान का हमें प्यार मिलता है।

दादा भगवान कहते थे "गरीब वह है जिसे गुरु नहीं मिला और अमीर वह है जिसे सच्चा गुरु मिल गया है"।

दादा भगवान के पास एक योगी आया। दादा! आप ने आज का अखबार देखा है? दादा भगवान ने कहा "हम अखबार नहीं पढ़ते। अखबार की सारी खबरें झूठी होती हैं। योगी ने कहा "मैंने एक लाख रुपया दान दिया है। उसी बाबत मेरा नाम छपा है।"

दादा भगवान जी ने जोश में आकर उसे गाली दी और कहा हम कहते हैं तुम अपना नाम भुलाओ और तू खुश है कि तेरा नाम छपा है! गधे! जिस दिन तू मरेगा उस दिन भी तेरा नाम छापे में आयेगा। उस दिन की भी जाकर तू खुशी कर।

दादा भगवान को कुछ चाहिए नहीं था. इसी से वह निडर होकर तीखा शब्द भी दे देते. कि जैसे भी हो इन को सुभागी बनावें।
दादा भगवान के पास सब की अक्कल की कुंजियाँ थी।

दादा भगवान के पास एक योगी आती थी उसका बीमार पति सारा दिन घर पर ही रहता था जिससे यह . . . बन्धन में थी।

दादा भगवान के ज्ञान से यह योगी ऐसी Artist बन गई - जो इसने एक समझ थी।

इसके घर के नजदीक ही Bus-Stand था जहां से बस शुरू होती थी और वापस आकर रुकती थी।

यह योगी अपने पति को तैयार करके उसे bus stand से एक bus पर चढ़ा देती, साथ में नाश्ता और पानी की बोतल भी दे देती। बस कन्डक्टर (Conductor) वाकिफ हो गया था। रास्ते में वह भी ख्याल रखता था।

उसके लौटने के टाइम यह योगी bus-stand से अपने पति को वापस ले आती थी।

चार घन्टा बाहर की हवा खा कर और शहर घूम कर पति थक कर आता था। और खाली समय में यह योगी दादा भगवान का ज्ञान सुनकर स्वयं भी तृप्त हो जाती थी।

एक योगी ने कहा 'दादा आप हर समय एक ही बात कहते हो ज्ञान सुनो! ज्ञान सुनो! मुझे आने की फुर्सत कहां है?" दादा, भगवान ने कहा, 'दोपहर को तो थोड़ा टाइम मिलता है ना।' वह योगी बोली 'दोपहर को भी आटा पिसाने जाना है,' दादा भगवान ने प्यार से कहा, 'अच्छा! तो मैं आटे की चक्की पर आकर तुझे ज्ञान सुनाऊंगा।'

दादा भगवान को एक एक के लिए दर्द या करुणा थी कि गृहस्थी की टके टके की सेवा में कहीं इनका मानुष चोला व्यर्थ ना चला जाये।

एक दिन उन्होंने कहा 'कल मैं सारी रात जागा हूं। सोचता रहा हूं कि सुबह उठकर मैं इनको कौन सी बात सुनाऊंगा जिस से इन्हें सुजागी मिले।

योगी जब ऐसे सुनते थे जैसे दादा भगवान पर एहसान कर रहे हो। पर इसका दादा भगवान को कोई मलाल ना था उन्हें ना तो कीर्ति की चाहना थी - ना ही किसी से Thankyou की।

दादा भगवान को एक कान से कम सुनाई पड़ता था। जब कोई परिचिन्तन लेकर आता था तो दादा भगवान अपना वही कान आगे कर देते थे। सुनाने वाला समझता कि दादा उसकी बात सुन रहे हैं।

एक दिन दादा भगवान के शरीर की पत्नि रुक्की अपनी बहुओं की ढेर सारी बातें दादा भगवान को सुना रही थी। वह विशेष खुश थी कि दादा भगवान कितने धीरज से सुन रहे थे। बीच में जब उसे पता लगा कि दादा भगवान का कम सुनने वाला कान आगे है और उन्होंने तो एक शब्द भी अन्दर नहीं लिया तो वह बहुत रोई थी, चिल्लाई भी थी पर उस दिन के बाद उसने दादा भगवान से ना घर का ना बाहर का कोई भी परिचिन्तन करने का प्रयास ही नहीं किया था। दादा भगवान खुद तो पूरे निर्लेप थे, निर्बन्ध थे। उन्होंने घर वालों को भी बन्धन मुक्त कर दिया था। वह कहते ना मैं किसी का ना कोई मेरा

हर युग का पैगम्बर अपना मिसाल कायम करता है और समय के वक्ष पर अपने पदचिन्ह छोड़ कर जाता है।

निष्कामता में, प्रेम में, भगवान कृष्ण ने जूठी पत्तलें उठाई थीं।

दादा भगवान ने भी योगियों के जूठे बर्तन धोए, commode भी धोया, उनके कपड़े धोए, यहाँ तक कि बाथरूम में। योगी पैदल करके, थके हुए आते थे तो दादा भगवान उनके पांव भी दबा देते थे।

दादा भगवान में निष्कामता बेहद की थी। कोई भी हक जमा के दादा भगवान से कैसी भी सेवा करवा लेता।

एक दिन एक स्त्री अपना बच्चा साथ लेकर आई और बोली — दादा। आज मेरी तबीयत ठीक नहीं है आप मेरे बच्चे को स्कूल छोड़ कर आयेंगे?

दादा भगवान ने जरा भी नहीं सोचा। तत्काल कहा अच्छा! तेरा बच्चा छोड़ कर आऊंगा। जब स्कूल बन्द होगा तो लेकर भी आऊंगा और तेरे घर आकर पहुंचाऊंगा।

दादा भगवान के ज्ञान से सबको घर गृहस्थी में सुख शान्ति रहने लगी थी। दादा भगवान के पास जो योगी स्त्रियां ज्ञान सुनने आती थीं ज्यादा तर वह अनपढ़ और सरल सीधी होती थीं। दादा भगवान उन्हें रमज से ज्ञान बताते हाथ जोड़दो आ

मन मोड़दो आ

सबकी सेवा करो। क्योंकि जितना जितना शरीर घिसेगा तुम्हारी आत्मा बसेगी।

अपने को मोड़ेंगे तो सुखी रहेंगे। मुड़ेंगे नहीं तो नष्ट हो जाओगे।

मुड़ो वजो नीता मेरी वेदा

फिरी वजो नीता कुरजो वेदा

जैसे तेज हवा में जो टहनी मुड़ती नहीं वह टूट जाती है। जो मुड़ती है तो बच जाती है। नष्ट नहीं होती।

दादा भगवान कहते कि एक माचिस की तीली को भी प्रणाम करो। नम्रता तुम्हारा सब से सुन्दर आभूषण है सदा पहिने रहो

दादा भगवान ने अपनी हस्ती को total गवां दिया था

बुद्धि ज्ञानी हर बात में अपने को मोड़ लेता है। कोई क्रिया करते करते कोई बोलता दादा! ऐसे नहीं! ऐसे करो, तो दादा भगवान उसके कहने मुताबिक हो जाते, चाहे बाद में, सामने वाले को पछताना पड़ता और माफी मांगनी पड़ती कि मैंने अपनी will क्यों चलाई?

एक बार मोरबी में दादा भगवान अपने योगियों के साथ पैदल निकले। सड़क पर मुड़ ही थे कि एक योगी ने कहा "दादा! इस रास्ते से नहीं उस रास्ते से चलते हैं।"

दादा भगवान अपने योगियों के साथ फौरन मुड़ गये। अभी कुछ ही कदम चले थे सामने सड़क पर एक बड़ा काला सांप था। सबके प्राण सूख गये। दादा भगवान ने इशारे से सबको स्थिर रहने को कहा। वह सांप चुप चाप सड़क पार कर गया। योगी को अपनी गल्ती का अहसास हो गया कि वातें क्यों बनी?

दादा भगवान में इतनी नम्रता थी कि कोई कहता "दादा! मुझे अभी तक ज्ञान नहीं लगा है तो दादा भगवान कहते "इसमें तेरा कोई दोष नहीं है। यह मेरी कमजोरी है। एक बार यही शंका किसी और ने प्रकट की तो दादा भगवान ने कहा "स्त्री मर्द शादी करते हैं यदि बच्चा नहीं होता तो डाक्टर कहता है "या तो मर्द में कमी है या फिर स्त्री में कमी है। गुरु के ज्ञान से तुम्हें निश्चय नहीं हुआ - आनन्द नहीं मिला है तो "या तो गुरु कांचा है और या फिर तुम्हारे हाथों में कचरा भरा हुआ है।

दादा भगवान ने एक Army general को नम्रता का गुण सिखाया, वह वर्दी में जहां से भी गुजरता, सभी उसे salute करते, जिससे वह अकड़ कर चलता। दादा भगवान ने उसे कहा "यह तुम्हें सलाम करते हैं। इससे तुम बड़े आदमी नहीं हो। इनसे पहले, तुम इन्हें सलाम करो तो मैं तुम्हें बड़ा आदमी समझूंगा"।

एक बार दादा भगवान हरिद्वार में थे। वह गंगा किनारे बैठे थे। देखा दो लड़कियां लहरों में फंस गई थी और डूब रही थी। वह हाथ ऊंचा करके मदद मांग रही थी। अपनी जान की परवाह ना करते हुए, दादा भगवान गंगाजी में कूद पड़े और उन दोनों को बचा

कर बाहर ले आये।

दोनो लड़कियां शुक्राने करने लगी। दादा भगवान में नम्रता का गुण तो कूट कूट कर भरा था। दादा भगवान ने कहा "तुम ने ही कोशिश करके अपने को बचाया है। उसमें मैंने क्या किया है?"

दादा भगवान एक वाक्य का बहुत सुन्दर प्रयोग किया करते थे "नम्रता में अमरत है"।

जो पूरे निश्चय में है वह balance में है और अधजल गगरी छलकत जाय। ज्ञानी मौन में रहता है। अज्ञानी को ही I KNOW का और कर्तापन का रोग होता है।

हरिद्वार में दादा भगवान एक सन्त, स्वामी जी को मिलने गए। उनके आगे कई फल के टोकरे पड़े थे। दादा भगवान को देखकर, वह अहम्-भाव में मुस्कुराया और कहा 'यह सब तपस्या का फल है" दादा भगवान ने कहा "तपस्या का बस इतना ही फल है? तपस्या का फल तो मुक्ति होना चाहिए"। दादा भगवान कहते थे "ना तो जगत से दूर भागो ना ही जगत के पीछे भागो"।

दादा भगवान को दुख होता था कि घर के सुख आराम छोड़ कर, यह साधु बन कर, यहां आनन्द की खोज में आते है, पर कीर्ति में फंस जाते हैं।

दादा भगवान ने एक जगह कहा 'यह साधु सन्त कीर्ति के आधीन होकर आश्रम बनाते हैं - अपने को प्रकट कराते है! अपना त्याग - ज्ञान - ध्यान। दुनियां में मशहूर होकर दिखाते है ...। याद रखो कामिनी, कंचन, कीर्ति यह तीनों ज्ञान में रुकावट है। इसी वजह से,

जब सत्संग में ज्यादा लोग आने से भीड़ हो जाती तो दादा भगवान सत्संग ही बन्द कर देते थे। कभी वह बिलकुल चुप साध लेते थे; और कभी वह गालियां देने लगते, जिस से जो झूठे है, वह उठकर चले जाते और जो सच्चे है वह बैठे रहते थे। नानक को पत्थर फेंकने शुरू किये थे - सत्संग में जो timepass करने आते थे वह मानते कि बाबा पागल हो गया है।

चाहे एक होवे, पर दादा भगवान को सच्चा जिज्ञासु पसन्द
था। एक प्रेमी भक्त को दादा भगवान, उसके घर पर रोज ज्ञान
सुनाने जाते थे। वह सीढ़ियाँ नहीं उतर सकता था। दादा भगवान
भी सीढ़ियाँ नहीं चढ़ सकते थे। दादा भगवान को कुर्सी पर बिठा
कर ले जाया और ले आया जाता था। एक योगी दादा भगवान
का वचन लेने रोज़ आकर नीचे खड़ा हो जाता। वह सीढ़ियाँ नहीं
चढ़ सकता था। दादा भगवान नीचे आकर उसे वचन देते तो ही
उसे तृप्ति आती थी। दादा भगवान की निष्कामता का प्रमाण है।
एक स्त्री के पति का शरीर कुछ दिन पहले शान्त हुआ था। उसने
दादा भगवान से ज्ञान सुना तो हिम्मत में आ गई थी। उसने सुना
दादा भगवान जा रहे हैं। सामान taxi पर चढा दिया गया था। वह
योगी भाग कर आई और मिन्नत से कहने लगी, 'दादा। नहीं जाओ।
आपने मुझे खड़ा किया है। आप चले जायेंगे तो मैं फिर नीचे
गिर जाऊँगी'।

दादा भगवान ने जाना cancel कर दिया और योगियों से taxi
पर से सामान नीचे उतार लेने को कहा। दादा भगवान के हृदय
की उदारता और विशालता अद्वितीय थी। किसी का कितना बड़ा
दुख होता दादा भगवान के ज्ञान से दूर हो जाता और वह कहता
"ज्ञान मिल जाने से, मैं आनन्द में आ गया हूँ।
दुःख थी वह्या दूर - सुख सच्चो सुख मिलो वह्यो।"
दादा भगवान के शब्द में नानक बोले बोल कर चला
गया। तुमने नहीं सुना। अब मैं जो कह रहा हूँ, तुम मानते
क्यों नहीं। मान न मान तू है भगवान। भगवान तो आहे ही आहे।
मी ही तो आहे। मी ही तो आहे।

दादा भगवान के पास एक युवक ज्ञान सुनने आता था। दादा
भगवान से प्रश्न उत्तर करके उसके संशय भरम नष्ट हो गये थे।
इसका अज्ञान चला गया था अब वह जब निश्चय की बात करता
तो योगियों को आनन्द आता था।

यह युवक जब आता तो दादा भगवान उसे कुर्सी पर बिठा देते
कि ज्ञान तू चला और खुद नीचे बैठ जाते थे। दादा भगवान
की इतनी नम्रता देखकर सभी हैरान भी नम्रता के आचरण में

रहने की कोशिश करते।

कबीर कहते हैं फल से लदी हुई डाली ही नीचे झुकती है

दादा भगवान का सिद्धान्त था 'मनुष्य चोला रोने धोने के लिए नहीं मिला है – आनन्द में रहने की अपनी आदत डालो।'

दादा भगवान कहते 'हसांदियां। खिलांदियां। खावांदियां ते विचों होईयां मुक्त।' ज्ञान भी रस भरा होवे। वैराग्य भी होवे, पर रस भरा होवे। सूना ज्ञान और सूना वैराग्य तो मनुष्य को सूना सूना बना देता है।

एक ने आकर दादा भगवान से कहा 'दादा! हमारे पड़ोस में शादी है। वह Music इतना ऊँचा बजाते हैं कि हम रात भर सो नहीं सकते।'

दादा भगवान ने कहा 'उन्हें खुशी करने का मौका मिला है, उन्हें करने दो। खुशी तो कभी कभी आती है। नीन्द तो तुम रोज करते हो।'

दादा भगवान कहते "हर बात की मौज लो"। समझो किसी को दो घन्टे बाद फांसी लगनी है तो वह दो घंटों की भी मौज लो। हो सकता है फांसी का हुकम टल जायगा। फांसी का समय टल जाये। बाकी चिन्ता शोक से क्या मिलेगा?

दादा भगवान को यह भजन अच्छा लगता था

'हर वक्त हंसी : हर वक्त खुशी
हर वक्त अमीरी है बाबा'

दादा भगवान के छोटे का बेटा जर्मनी में था। उन्हीं दिनों दूसरा महायुद्ध शुरु हो गया। बेटे के शरीर में छ: गोलियां लगी थी। उसे, इसी नाजुक हालत में हिन्दुस्तान ले आया गया था। घर वाले बड़े चिन्तित थे। ऐसी स्थिति में दादा भगवान ने उसे कहा "मैं तुम्हें बधाई देता हूँ कि इस बहाने तुम बिस्तर पर लेटे हो। नहीं तो काम से तुम्हें फुर्सत ही नहीं मिलती थी। अब तुम गीता का ज्ञान लो यही तुम्हारे काम आने वाला है। सत्संगियों ने उसके साथ बड़ी इज्जत की।

उसने ज्ञान उठाया और जल्दी ठीक हो गया।

दादा भगवान ने [illegible] की भलाई का उसे [illegible] प्रयत्न किया था

दादा भगवान कहते 'जो अन्दर का दे उपदेश
वही सच्चा दरवेश'

दादा भगवान को ना तो जगत से शिकायत थी - ना ही जगतवालों से और ना ही उन्हें कभी ईश्वर से ही शिकायत थी। सब को क्षमा कर देना उनका विशेष गुण था। और किसी का थोड़ा किया भी वह याद रखते और किसी भी बहाने शुक्राना जाहिर करते। एक बार वह लंडन से अपने स्कूल टीचर के लिए महंगी gift लेकर आये। टीचर बहुत खुश हुआ। उसने कहा "मुझे आज भी याद है कि तुम्हारी शरारतों के लिए मैं कई बार, तुम्हें डांटता था और सजा भी देता था। फिर भी तुमने मुझे याद रखा और मेरे लिए सौगात लाये हो।

दादा भगवान ने कहा, "इस मुकाम तक आप ने ही मुझे पहुंचाया है"

किसी को भी खुश देख कर या खुशी देकर, दादा भगवान को अन्दरुनी खुशी मिलती थी।

R

एक योगी ने कहा

दादा इतने सात्त्व ज्ञान सुना है - फिर भी मन आता है,
दादा भगवान ने कहा "कोई बड़ी बात नहीं है - हमारा मन भी आता है।"

वह योगी प्रेम में रोने लगी

नहीं दादा। आप को मन नहीं आता है। मुझ को encourage करने के लिए आप ऐसा कह रहे हैं।

आम Operation के बाद डाक्टर घरवालो को कहता है 'Operation कामयाब रहा है।
मरीज जिन्दा है। मरा नही है।
परन्तु ज्ञान में गुरु के हाथो से Operation कामयाब रहता है कि मरीज अब मर गया है। The patient is no more alive. He is dead now.

दादा भगवान कहते है 'ज्ञान के बाद जो सच्चा जिज्ञासु है वह अन्धा बेहरा गुगा हो जाता है', उसके कानो मे जगत का शोर नही जाता वह केवल गुरु की आवाज सुनता है।' भगवान जी के शब्द भी इसी तरह से है 'हम बक बक वाला, चंचलता वाला योगी नही, मुर्दा योगी पसन्द है। एक बार

दादा भगवान अपनी आंखे दिखाने एक eyes specialist के पास गये। वह डाक्टर अपनी काबलियत की बडी बडी कथाये बताने लगा।
दादा भगवान ने कहा 'तुमने केवल successful operations किये है या कभी कोई wrong operation भी किया है?
डाक्टर चुप हो गया, सोच कर बोला 'एक बार, एक मरीज अपनी एक आंख के इलाज के लिए मेरे पास आया था। मेरी लापरवाही से उसकी दोनो आंखे खराब हो गई थी।

दादा भगवान ने कहा तुमने सफल operation किये तो उसे सरदार भी तुमने ही बनाया। डाक्टर नम्रता मे आ गया और कहने लगा, 'मनुष्य के हाथ मे क्या है? सब करने वाला ईश्वर ही है। दादा भगवान को डाक्टर का यह जवाब पसन्द आया था वह कहा करते थे

सब को संग सहेलियां
सब को काला केस
सब को इस जग जीतना
सब को राजा देस
फिर मनुष्य अहंकार करता है तो किस बात के लिए?

## गरीबों के लिए दादा भगवान को विशेष करुणा थी

कहीं मोटर में जाना होता था तो वह पहले गरीब को अन्दर मोटर में बिठाते और पीछे और जन बैठते थे। दादा भगवान गरीबों को, अमीरों के साथ घुमाते फिराते। उनके घरों में भेजते और कहते OBSERVE करके आओ, ताकि उन्हें पता लगे कि धन के कारण कितने दुःख, कितनी बीमारियां और कितनी समस्याएं हो सकती हैं जिससे, उन्हें अपनी गरीबी अखरे नहीं।

सत्संगी प्रेमी शहर शहर से, देश विदेश से खतो किताबत करके दादा भगवान से ज्ञान के वचन लेते - अपने संशय निवारण करते, और अपनी समस्याओं का हल पाकर, हिम्मत में आ जाते थे। दादा भगवान, हर एक को चिट्ठी का जवाब जरूर देते थे। इससे निर्बल को बल मिल जाता था। लखनऊ के पास एक छोटे राज्य के राजा रानी थे। दोनों ने दादा भगवान से ज्ञान सुना। एक दिन राजा बहुत बीमार हो गया। उसे मरने से डर लगने लगा था। उसने चिट्ठी में अपना भय लिखा। दादा भगवान ने उसे ज्ञान का जवाब दिया "पछताने से सब पाप धुल जाते हैं और कहा कि आत्मा में No SICKNESS, NO SIN, NO DEATH है। तू आत्मा है। तू अजर है। अमर है। तू तो मरने वाला ही नहीं है।" दादा भगवान के इन वचनों से राजा को बल मिला। अपने अन्तिम क्षणों में वह आत्मा के पूरे निश्चय में था।

दादा भगवान किसी के घर का पानी का गिलास भी नहीं पीते थे। घर से चलने से पहले वह अपने घर से ही पानी पीकर चलते थे। एक बार कोई दादा भगवान के लिए केले ले आया। दादा भगवान ने कहा 'वह सामने गाय है। उसे खिला दो।'

एक बार कोई फूल लेकर आया। दादा भगवान ने कहा "तुम खुद को लेकर आये हो। यह काफी था। इन बेचारे फूलों को उनके साथियों से अलग करके क्यों लाये हो।"

एक ने बड़े प्यार से दादा भगवान को पूछा "दादा! कल मैं आप के लिए क्या लाऊं?"

दादा भगवान ने कहा 'कल तू सिर्फ अपने आप को लेकर आना।'

दादा भगवान जो जवाब देते थे - वह संक्षिप्त होता to the point होता और ज्ञान का होता था।

एक ने कहा दादा ! निश्चय नहीं होता कि मैं भगवान हूँ।(पुरुष)
दादा भगवान ने कहा कि तू भगवान नहीं है तो कुत्ता है क्या?

Either you are God or you are Dog!

एक योगी ने कहा दादा ! ईश्वर के दर्शन चाहता हूँ। कैसे पाऊँ? दादा भगवान बोले ईश्वर कहाँ नहीं है? है तो अभी का अभी यहीं है नहीं तो कभी भी कहीं नहीं है।

NOW HERE OR NO WHERE (NOWHERE NOWHERE)

दोनों का Spelling एक ही है।

तू तोड़ कर कैसे भी जान।

WORLD में ही LORD छिपा है।

तू खोज तो मिले गा

दादा भगवान को अपने योगियों का चौतरफा ध्यान रहता था। वह खत लिफाफे Stamps का stock अपने पास हमेशा रखते थे कि इतवार या छुट्टी के दिन किसी को urgent जरूरत पड़ सकती है।

वह योगियों को लेकर सैर जाते थे तो एक जोड़ा चप्पल extra उठा लेते थे कि किसी की चप्पल रास्ते में टूट भी सकती है।

दादा भगवान के थैले में 1st aid का सामान रुई पट्टी और dettol हमेशा रहता था कि शायद किसी को खरोंच आ जाये। दादा भगवान हर बात में सुजान रहते थे।

घर से चलने के टाइम जब योगी कमरे को ताला लगाते थे तो दादा भगवान इनको दोनों चाबियाँ उठाने को कहते थे। एक चाबी रास्ते में गिर सकती है तो दूसरे योगी के पास जो दूसरी चाबी है वह काम में आ सकती है।

एक दिन एक योगी ने आकर बताया कि वह सुबह मन्दिर से नारियल चढ़ा कर आई है। इस पर दादा भगवान ने कहा "तू अपना सर्वस्व क्यों नहीं चढ़ा कर आई?"

दादा भगवान के पास एक जना फल का टोकरा लेकर आया। दादा भगवान ने कहा "फौरन उठा और वापिस ले जा नहीं तो वैसी करके हमें तेरे घर पर छोड़ने आना पड़ेगा।"

दादा भगवान का दिल होता था। सब सुखी रहें। एक भी कष्ट में ना होवे। उसी से वह PRACTICAL युक्तियां देकर उनकी समस्याओं के सीधे सरल हल बताते। दादा भगवान कहते "NYLON के मोजे की तरह हो जाओ जो हर पांव में फिट हो जाता है।" "तू सुधर तो सब सुधरे पड़े हैं।" "बदले ना दुनियां, बदल जाये हम।" हालातों को नहीं बदला जा सकता। क्यों ना हम अपने आप को बदल लेवें? दादा भगवान ने एक को लिख कर वचन दिया "सारा दिन मुस्कुराओ और प्रभु के गुन गाओ। तेरी आधी बीमारी तो इसी से चली जायेगी" एक जगह और कहा "मुस्कुराने में और प्रभु का शुक्राना करने में कभी कंजूस नहीं बनना।" दादा भगवान कहते थे "घर में शीशे होने चाहिए, अपने आफिस में भी रखो। ताकि दिन में कई बार तुम देख सको - मेरे चेहरे पर मुस्कुराहट है ना। नहीं है तो वापिस ले आओ।"

एक बार, एक प्रेमी भक्त ने दादा भगवान की पोशाक पहनने की ख्वाहिश जाहिर की। दादा भगवान ने कहा कि अगर पोशाक पहनने से ही ज्ञान लग सकता तो मैं अपनी चमड़ी की पोशाक बनवा कर तुम्हें पहना देता।

दिल से दादा भगवान एक बालक सदृश थे। कोई कहता तो बैठ जाते। कोई कहता तो साथ चल पड़ते। कोई अपना दुःख बताता तो दादा भगवान उसे ज्ञान सुनाना शुरू कर देते थे। दादा भगवान ARTIST भी ऐसे थे कि सामने वाले को उसी की जरूरत का ज्ञान देकर, उसे उसके पैरों पर खड़ा कर देते थे। दादा भगवान उसे ऐसी [illegible] से अन्दर ही अन्दर ज्ञान पकड़ा देते और वह समझता मुझे प्यार कर रहे हैं॥

दादा भगवान किसी पर भी हुकुम नहीं चलाते थे। जो काम होता वह स्वयं करने लगते, जिस से सामने वाले का विवेक जाग जाता कि जो सेवा है - मुझे ही करनी चाहिए।

एक बार दादा भगवान योगियों के साथ माथेरान गए। बहुत दिनों से बंगला बन्द पड़ा था तो सब धूल मिट्टी थी। योगी टैक्सी स्टैन्ड से पैदल आये थे। थके हुए थे। बाहर सीढ़ियों पर ही आराम करने बैठ गये थे।

दादा भगवान ने किसी से कुछ नहीं कहा। झाडु उठा कर बरन्डे में देने लगे। यह देख कर सबको सुजागी आई - कितनी सेवा सामने है? सद्गुरु के हाथ में झाडु है और हम बैठे हैं। सभी उठ खड़े हुए। किसी ने dusting की, किसी ने किचन को देखा, कोई थैले उठाकर बाजार खरीद फरोख्त को निकल गया।

माथेरान में जो योगी साथ गए थे उनमें एक योगी थी जो केवल European Style बाथरूम में ही जा सकती थी। एक बाथरूम ऐसा था पर इस्तेमाल नहीं हुआ था मुद्दत से - तो उसका Commode बहुत गन्दा था। उस योगी ने कहा इतने गन्दे Commode को use करना मेरे लिए नामुमकिन है। दादा भगवान स्वयं बाथरूम में गए और Commode को साफ कर दिया। छोटा बड़ा, हर काम पूजा होता था।
वह योगी बहुत शर्मिन्दा हुई। सब योगी भी शर्मिन्दा हुए। उनका अन्दर से विवेक जाग गया। "जो सच्चे ज्ञानी हैं, ब्रह्मज्ञानी हैं, आत्मा का ज्ञान सुनाने वाले, ब्रह्म में टिकाने वाले - निश्चय कराने वाले आज उन्होंने इतनी छोटी सेवा निष्कामता में की।" दादा भगवान के लिए कोई भी काम छोटा बड़ा था ही नहीं। वह हर काम को WORK IS WORSHIP करके देखते थे। "काम को DUTY समझा तो उसकी BEAUTY चली जायेगी। हर सेवा प्रेम से - धीरज से करोगे तो उसकी भी मौज ले सकोगे।"

[illegible] भगवान के आदर्श से योगी अपने आप को बदलने का [illegible] करते। सद्गुरु इतनी निष्कामता में है तो कम से कम हम अपनी सेवा तो स्वयं करें। किसी को order नहीं करें, किसी पर बोझ नहीं डालें।" [illegible] से वापस लौटने पर इनके घरवाले खुश होते थे कि इनका स्वभाव change हो गया है और योगी खुद भी सुखी हो जाते।

... की अपनी बीमारी की या शरीर की कभी (सुध)

भी फिक्र नहीं होती थी।

वह कभी नहीं कहते कि मुझे तकलीफ है या डाक्टर को दिखाओ, या इलाज कराओ। Totally वह अपने शरीर से ऊपर थे।

इसी से जब कोई उनसे उनकी सिहत की बात करता था तो उन्हें पसन्द नहीं आता था। एक को उन्होंने कहा मैं बीमार नहीं हूँ।

तुम सभी बीमार हो। एक तो तुम्हें हौं मैं का दीरघ रोग है। दूसरा रोग ममता का है और तीसरा तुम कर्तापन से ग्रसित हो।

योगियों से दादा भगवान का शारीरिक कष्ट देखा नहीं जाता था। किसी भी तरीके से वह सेवा, मदद करना चाहते थे। दादा भगवान ने उन्हें एक दृष्टान्त सुनाया

एक गुरु खड्ड में गिर गया। शिष्यों ने बहुत चाहा उसे खड्डे से बाहर निकालें पर गुरु मान ही नहीं रहा था। गुरु ने कहा तुम निकालोगे तो तुम्हें अहंकार हो जायेगा कि मैंने गुरु की मदद की। इस से तुम्हारा सारा ज्ञान और गुरु की सारी मेहनत मिट्टी में मिल जायेगी। इसलिए मैं यहीं - खड्डे में ही हूँ, जब तक कोई राह चलता आकर मुझे बाहर नहीं निकालता है।

अपने शिष्यों की संभाल के लिए गुरु ही सारी तपस्या करता है।

दादा भगवान स्वयं सब कष्ट सहन कर लेते पर अपने आराम के लिए किसी को कष्ट उन्हें मन्जूर ना था। वह कहते जब तुम तन्दरुस्त हो तो नमृता में ऐसे रहो जैसे बीमार हो और जब तुम बीमार हो तो सब तुम्हें तन्दरुस्त देखें। तुम्हारे चेहरे पर पानी की लकीर भी नहीं आये।

भगवान जो कहते हैं

पैगम्बर को दुःख नहीं आते क्योंकि उन्हें सुखों की इच्छा नहीं होती। पैगम्बर को शरीर का कष्ट भी नहीं भासता क्योंकि पैगम्बर शरीर से ऊपर होता है।

दादा भगवान बिल्कुल बेखबरी में रहते थे। उन्होंने अपना शरीर योगियों के ही सुपुर्द कर रखा था। एक बार एक योगी दादा भगवान को दवा खिला कर गई। इतने में दूसरी योगी आई और वही दवा खिलाने लगी। वहां एक तीसरी योगी बैठी थी तो उसने टोका 'यह गोली तो अभी दादा ने ली है'।

पूना में दादा भगवान को 'हरपीज' की तकलीफ हो गई। इसमें बहुत दर्द होता है और बुखार भी आ जाता है। डाक्टर सुबह देखने आता था। वह पूछता "आज आप की तबीयत कैसी है?" हर बार दादा भगवान का एक ही जवाब होता "I am feeling better than before." डाक्टर हैरान हो जाता। हरपिज तो और भी फैल गया है, इससे दर्द भी जरूर होगा - बुखार भी कम नहीं हुआ और दादा कहते हैं "मैं कल से आज ठीक हूँ"। दादा भगवान कहते थे "असह्य पीड़ा में भी मैं समझता हूँ कि इसमें मेरी भलाई है। लड़ाई तुम्हें अकेले ही लड़नी है। हर एक अपनी लड़ाई अपनी शक्ति से लड़ता है। दूसरे की ताकत का आधार नहीं रखना।"

कोई कितना भी दृढ़ अध्यासी आता, दादा भगवान का वचन सुनकर निश्चय में खड़ा हो जाता था। एक बार एक नया जिज्ञासु आया, उसने कागज पर लिखकर दिया "मुझे मौन में ज्ञान चाहिए"। दादा भगवान मुस्कुराए। उन्होंने आगन्तुक की आंखों में देखा और देखते रहे। कुछ देर बाद उस नये जिज्ञासु की आंखें झपक गईं। उसने कागज पर लिखा "मैं तृप्त हो गया हूँ। मुझे सब कुछ मिल गया है"। कागज दादा भगवान के हाथ में देकर वह उठकर चला गया।

दादा भगवान का अपना निश्चय इतना दृढ़ था कि कोई भी कायल हो जाता था।

एक बार मायरान में एक मदारी आया। एक लम्बा सुआ, उसने अपने नाक के आर पार खुभोया। फिर हाथ में, और फिर बांह।

के आर पार खुमाया। देखने वालों की सांसे रुकी हुई थीं। दादा भगवान उसी तरह - एक रस होकर तमाशा देख रहे थे। वह मदारी बोला "आप किस मिट्टी के बने है? मेरा तमाशा देख कर बड़े बड़े पराक्रमी हिल जाते हैं और आप पर कोई असर ही नहीं हो रहा।"

जिसने एक रस होकर रहना सीख लिया है वही सुखों में और दुखों में अपना balance बनाये रखता है। दादा भगवान को सारा जगत खेल की तरह था। एक ने आकर दादा भगवान से कहा "दादा! आप का पत्र मिला था तो मुझे बहुत खुशी हुई थी" दादा भगवान ने कहा "पत्र नहीं मिला होता तो तुझे रंज भी बहुत होना था - आत्म ज्ञान का आनन्द छोड़ कर तुम छोटी छोटी बातों में दुखी सुखी होते रहते हो।

तुम अपनी आत्मा के निश्चय में कब आओगे?"

दादा भगवान के शरीर में कितनी भी पीड़ा होती थी पर दादा भगवान के चेहरे पर मुस्कुराहट रहती थी। उनके हाथों में तकलीफ थी। हाथों पर गरम गरम मक्खन डब्बे के साथ उड़ेला जाता था। देखने वालों के चेहरे ज़र्द पड़ जाते थे पर दादा भगवान के चेहरे पर लकीर तक नहीं आती थी। वह वाणी चला रहे थे तो वाणी चलती रहती थी।

एक बार किसी ने गल्ती से दादा भगवान के ऊपर गर्म चाय गिरा दी। दादा भगवान ने एक शब्द भी नहीं कहा। चुपचाप उठ अन्दर गये - कुर्ता बदल कर बाहर आ गये।

उनमें इतनी सहनशीलता थी कि वह अपना मौन टूटने नहीं देते थे। दादा भगवान को एकान्त और मौन - दोनो बहुत पसन्द थे। कभी कभी वह उल्टा अखबार लेकर बैठ जाते थे, जिस से कोई आकर उनकी शान्ति भंग ना करे।

योगियों के साथ PICNIC जाते तो कापी पेन्सिल लेकर पेड़ के नीचे बैठ जाते थे और अपने से ही 'मौन और एकान्त' दोनो का मौज लेते।

दादा भगवान का ज्ञान वैराग्य वृत्ति का था, कोई चर

दिन सुनता तो उसके हाथ से माया और जगत छूटने लगते।
एक लड़की ने सुना तो उसने घर पर, शादी करने से
इन्कार कर दिया गुस्से में, उसका बाप, दादा भगवान से
झगड़ा करने आ गया। उस समय, उसके हाथ में छाता था। उस
ने छाते से दादा भगवान पर वार किया। भगवान जी
ने बीच में आकर, वह वार अपने पर, ले लिया और दादा
भगवान को चोट लगने से बचा लिया। बात बढ़ गई। Police case
हो गए। मुकदमा चला। एक दिन फैसला सुनाया गया कि
"लड़की बालिग है उसे अपना फैसला खुद करने का हक है"। इस
फैसले से उस लड़की के बाप को निराशा हुई। वह बीमार हो गया
बिस्तर पर लेटे लेटे - अपने से विचार करता रहा ठीक ही तो है।
बेटी की जिन्दगी है - वह जैसे भी जीना चाहे। उसकी मर्जी। वह
पछताया और दादा भगवान से आकर माफी मागी। वह ठीक भी हो
गया। दादा भगवान को जुबान का taste and [illegible] तो बिलकुल नहीं
था। उन्हें योगी जो कुछ भी खाने को पकड़ाते दादा भगवान उसमें
अपना आनन्द डालकर धीरे, धीरे बड़े प्यार से, आनन्द से खाते।
कोई नय योगी यह समझता कि ब्रह्मज्ञानी हैं पर कितना स्वाद ले
ले कर खा रहे हैं। यही शंका एक नई योगी के मन में आई।
दादा भगवान खिचड़ी खा रहे थे। जब उसे पता लगा कि इसमें
नमक ही नहीं है। डाक्टर ने नमक मना किया हुआ है - तो वह बहुत
शर्मिन्दा हुई। उसने दादा भगवान से अपने मन की काली करतूत
की माफी मांगी।

दादा भगवान ने कहा "मैं नहीं खाता हूँ। इस घोड़े
को दाना देता हूँ। जैसे motor चलाने के लिए petrol देना
पड़ता है - यह शरीर चलता रहे - इसीलिए इसकी भी पूरी
संभाल रखनी पड़ती है।"

एक योगी ने दादा भगवान को कहा "दादा! आपको हमारी
खुशी की चिन्ता रहती है!" तो दादा भगवान ने कहा "क्योंकि
तुम खुश करके हो मैं खुश होता हूँ।"

I want to be happy.
But I can be happy only when I make you all
happy

दादा भगवान के शब्द हैं :



" अजीब बात है मैं एक को प्यार करता हूँ तो दस जने आकर मुझे प्यार करते हैं । प्रेम ऐसा खजाना है जो जितना खर्च करो तो दस गुना, बीस गुना होकर वापिस मिलता है ।

यह प्रकृति का नियम है कि जब तक आस पास सभी सुखी नहीं है तू भी सुखी नहीं है । देह-अध्यासी सिर्फ मैं सुखी रहूँ और मेरे वाले सुखी रहें । इसी में खुशी मानता हूँ ।

दादा भगवान के लिए " जात हमारी आत्मा । परमेश्वर परिवार " था । यही उनका निश्चय था और यही इनका आदर्श था ।

दादा भगवान की सुख की परिभाषा थी

सुख ही सुख है देने में - दुख ही दुख है लेने में । इसलिए तुम लेने वाले नहीं - हमेशा देने वाले बनो । दादा भगवान कहते माँगना मौत समान है । भगवान से भी माँग कर, तुम भिखारी क्यों बनते हो ?

तुम्हारे पास जितना है, पहले उसका भोग तो लो ज्यादा की इच्छा करना - दुख खरीदना है ।

दादा भगवान कहते " इच्छा मात्रम अविद्या "

" इच्छा का तू घोंट गला - इच्छा है ऐसी बला

घुमाती है गली गली - मन को देती है खलबली

इससे है मौत भली ।

इच्छा नहीं है तो तू शाहों का शाह है । "

अपनी 64 वर्ष की आयु में भी दादा भगवान बसों में निष्काम सेवा के लिए आते जाते थे । कोई बीमार है या कोई याद कर रहा है, इतना सुनना काफी होता था और भगवान, फौरन उसे मिलने चल पड़ते थे । किसी से कुछ बताते या कहते नहीं थे । भगवान जी ... जैसे तैयार हो बैठे होते थे । दादा भगवान दरवाज़े से निकलते और भगवान जी ... साथ निकल जाते थे, दादा भगवान के पीछे पीछे ।

एक योगी का Operation था । चार घंटे चला । वह चार घंटे दादा भगवान Operation Theatre के बाहर खड़े रहे । वह योगी को पता लगा तो प्रेम में रोने लगी " दादा । कोई गुरु अपने [illegible] के लिए ऐसी तपस्या करता है ? दादा भगवान ने बड़ी नम्रता से कहा " मैं तो ऐसा नहीं था । गुरु ने मुझे ऐसा

बनाया है। इसलिए जो कीर्ति है मैं अपने गुरु को पार्सल कर देता हूँ "

दादा भगवान को कीर्ति से बड़ा परहेज था। वह कहते "कीर्ति से सदा बचना। कीर्ति - कहर का घर है" कीर्ति साबुन की सीढ़ी है। मनुष्य फिसल कर खड्डे में आ गिरता है।

एक बार दादा भगवान के पास एक सीधी सरल लड़की आई। घर में सौतेली माँ थी तो इससे बड़ा क्रूर बरतती थी। इस लड़की पर सभी योगी हुकुम चलाते। सारा दिन चुपचाप, यह सबकी सेवा में लगी रहती थी। दादा भगवान ने उससे कहा "तू अपने घर जा। जिस दिन मेरे भक्त तुझे आत्मा करके देखेंगे, उस दिन तुम आना।" योगियों को अपनी गलती का अहसास हुआ। दादा भगवान ने कहा "तुम्हें अपना आराम चाहिए। अपने सुख चाहिए तो ये सेवा करने वाले मैं कौन है? दादा भगवान पूरे निश्चय में थे। "मैं ही तो हूँ"। दादा भगवान पूरे अद्वैत में थे, एक भवाद्वैतिया, दूसरा तो है ही नहीं। जहाँ तहाँ मैनु तू वर्तता। एक बार दादा भगवान ने कहा गुरु कहता है तू भगवान से आया है। तू आत्मा है पर तुम्हारे दिमाग में, नहीं जाता है। तू कहता है - मैं फलाणा हूँ मैं फलाणे का बेटा हूँ।"

एक योगी ने पूछा "दादा आप हमें अज्ञानी देखते हो, तब ही ज्ञान देते हो।" दादा भगवान ने कहा "तुम आत्म ज्ञान निकालते हो, तो यह शब्द निकलते हो। वशिष्ठ जी ने राम जी को ज्ञान दिया, अज्ञानी नहीं देखा। राम जी को इसका स्वरूप याद कराया, जो वो अपना स्वरूप भूल गया था। हम भी यही कहते हैं ना, "तू है भगवान"

दादा भगवान कहते " इसमें नहीं कोई शक गुमान।
जिसका साथी है भगवान
उसका क्या करेगा आन्धी और तूफान।

एक योगी ने दादा भगवान से कहा देखा। आपके मुख से सुनना चाहता हूँ, भगवान किसको बोलते है?
दादा भगवान ने कहा 'भगवान उसको बोलते है जो भगवान जैसा चले भगवान जैसा रहे।
भगवान उसको बोलते है जो समझता है मेरा कर्म दिव्य है मेरा जन्म दिव्य है तो वह भगवान हो जाते है। दिव्य कर्म के माने है निष्काम कर्म जिसका फल नही चाहिए।
और उसकर्म के कर्तापन का अहंकार भी ना होवे।
कृष्ण हमेशा अपने को भगवान समझता था - वह अपनी आत्मा को नही भूलता था।
और अर्जुन, अपने को भगवान नही कह सकता था क्यो कि उसे अपनी body नही भूलती थी।
वह अपनी value नही रखता था।
दादा भगवान कहते
Know thy self and you know GOD
दादा भगवान कहते 'you see GOD and you be GOD
हर घट में, घट घट वासी को देखेंगे तो निश्चय में आ जायेंगे
The whole world is filled with GOD,
nothing but GOD."
"जो तू है सो मैं हु - जो मैं हु सो तू है'
यह ब्रह्म ज्ञान अद्वैत का ज्ञान है - जहां दूसरा, तो है ही नहीं 'खुद मुआ तो खुदा हुआ
खुदा और जुदा ? नामुमकिन'। दादा भगवान कहते
God has made man into his own image.

52B

दादा भगवान को एक सन्त अपना आश्रम दिखाने ले गया वहां उसके शिष्यों ने बाल कृष्ण की लीलाओं की नुमाईश लगाई थी।

दादा भगवान ने कहा "तुमने मेरा आश्रम देखा है? सारा ब्रह्मण्ड मेरा आश्रम है और मेरी नुमाईश देखो। कोई हंस रहा है कोई रो रहा है कोई आ रहा है तो कोई जा रहा है। कितनी बड़ी नुमाईश है।" इसी को भगवान जी ने पेन्टिंग कहा है। सब painting है। सारा जगत painting है। दादा भगवान विशालता में रमण करते थे।

एक बार, उन्होंने कहा

"तुम्हारी पहचान हिन्दु या मुसलमान होने से नहीं है - इन्सान होने से है" दादा भगवान कहते

जात हमारी आत्मा परमेश्वर परिवार

एक बार दादा भगवान की बहू रूठ कर अपने मायके चली गई थी। घर में सबने सलाह की, कि यदि दादा लेने जाये तो वह आ जायेगी।

दादा भगवान की अपनी will तो बाकी बची ही नहीं थी। दादा भगवान लेने चले गये। उन्हें बहू सखियों में ही मिल गई। सहेलियों के साथ वह picture जा रही थी।

दादा भगवान ने बड़ी सरलता से कहा तू जा। Enjoy करके आ। तब तक मैं तुम्हारे daddy से बात चीत करता हूँ।

picture देख कर बहू तीन घन्टे के बाद आई तब तक दादा भगवान उसकी इन्तजार में उसके घरवालों के साथ बैठे रहे। दादा भगवान को धीरज ही नहीं, महा धीरज था।

दादा भगवान अपने योगियों को हमेशा कहते थे: तुम धीरज को अपना मित्र बनाओ। कभी भी तुम्हारा नुकसान नहीं करेगा।

7

# "दादा भगवान की निष्कामता और करिश्में"

भगवान राम, तीर कमान वाले थे, कृष्ण की बांसुरी थी। दादा भगवान का चिन्ह प्रेम था। मेरे दादा की मुरली क्या बोले। प्रेम प्रेम प्रेम। सत्संग में आने से ही कईयों के रोग चले जाते। दवाईयां छूट जाती थी। दादा भगवान ने एक योगी को पत्र में लिखा "गुरु रोगी को अरोगी करता है। वह Surgeon doctor है जो ऐसी dose देता है कि सब बीमारी दूर हो जाती है - सब आपदा टल जाती है"

एक बहुत श्रद्धालु योगी थी। उसे नींद नहीं आती थी। उसने दादा भगवान से कहा "6 गोली खाती हूँ नींद नहीं आती। Compose का Injection लेती हूँ तो भी अच्छा सो नहीं पाती" दादा भगवान ने उसके सिर पर हाथ रखा और कहा "अभी जाकर सारी दवाईयां खिड़की से नीचे फेंक देना। आज कोई गोली नहीं लेना। सोने के time मुझे याद करना। मैं सुलाने आऊंगा"। उस योगी ने गुरु वाक्य सत्य करके सब दवाईयां नीचे फेंक दी। मन में थोड़ा भय थोड़ी आशंका थी। दादा भगवान के कहने के अनुसार उसने दादा भगवान को दिल से याद करके कहा "दादा मैंने आप की आज्ञा का पालन किया है। अब आओ। वादा निभाओ। दादा। आकर मुझे सुलाओ"। योगी के हृदय की सफाई थी और सच्चाई थी। वह योगी आज भी वह दिन याद करके प्रेम में रोने लगती है। कहती है "मुद्दत बाद, मुझे नींद आई थी और ऐसी सुख की नींद आई थी।" निराकार ने उस योगी से निष्काम सेवा लेनी थी जो उस बीमारी से और दवाईयों से दोनों से छुटकारा मिल गया था।

सत्संग में श्रद्धा और विश्वास के ऐसे करिश्मे रोज देखने में और सुनने में आते थे। एक प्रेमी भक्त को MIGRAINE की तकलीफ थी। सिर में असहनीय पीड़ा शुरू हो जाती और घन्टों तक रहती। उसने दादा भगवान को सिर झुकाया। उसका सिर जैसे ही चरणों को स्पर्श हुआ। वह

कहने लगी 'दादा। मेरे सिर का दर्द चला गया है।
और उसके बाद उसे फिर कभी माइग्रेन का दर्द नहीं हुआ।

एक दिन एक योगी स्त्री ने दादा भगवान से कहा 'दादा। मेरी
बांह में बहुत ज्यादा दर्द होता है। मुझे विश्वास है कि यदि आप
मेरी बांह को छू देंगे तो यह दर्द चला जायेगा। दादा भगवान
ने उसके कहने से उसकी बांह को स्पर्श किया। खुश होकर वह
कहने लगी "दादा मेरा दर्द चला गया। दादा। मेरा दर्द चला
गया है।"

दादा भगवान तो पूरे अकर्ता था। पूरी नम्रता में रहते थे। उन्होंने
कहा "मैंने कुछ नहीं किया है। यह तेरी अपनी श्रद्धा है। तेरा
अपना विश्वास है।"
CHRIST ने भी उस औरत को यही जवाब दिया था। वह अपना
मरा हुआ बच्चा लेकर क्राइस्ट के पास आई थी। "मेरा बच्चा मर
गया है। इसे वापस ले आओ।"
क्राइस्ट ने कहा था जो मर गया है वह वापस कैसे आयेगा?
उसी समय एक दूसरी औरत अपना मरा बच्चा ले कर आई,
क्राइस्ट को हक से बोली 'इसे आप छू देवें बस। मुझे पूरा
विश्वास है - इसके प्राण लौट आयेगें' और ऐसा ही हुआ।
उस स्त्री भक्त की बांह ठीक हुई देख कर रीस में एक
दूसरी योगी उठ कर आई "दादा। मेरी बांह में भी दर्द है।
आप छू देवें। मेरा दर्द भी चला जाये।"
यह योगी देह-अध्यासी थी। दादा भगवान ने कहा "हम तेरी
बांह को क्यों छूये? तू तो भोगियानी है।"
श्रद्धावाले जमते [illegible]।
[illegible] श्रद्धावाले को ही लगता है।
क्राइस्ट भी वही देख पाता है। जो श्रद्धा में है। जिस का हृदय
[illegible] है। दादा भगवान कहते थे Always be clean, not
clever.
[illegible] से चतुराई से [illegible] नहीं मिलेगा।
एक वृद्ध योगी थी। उसके दोनो घुटनों में दर्द रहता था। वह
लाठी का सहारा लेकर, [illegible] से रोज दादा भगवान की

वाणी सुनने आती थी। एक दिन दादा भगवान ने उसके दोनो घुटनो पर हाथ रखा और कहा "इस लाठी को फेंक दे। इसकी तुझे जरुरत नहीं है।"
उसने वचन का पालन किया। लाठी फेंक दी। और सचमुच वह अपनी दोनों टांगों से चल कर आने लगी। लाठी के सहारे की उसे जरुरत ही नहीं थी।

एक योगी के घर पर सत्संग था। सत्संग खत्म हुआ तो दादा भगवान उठ कर जाने लगे। वह योगी कहने लगा "नाश्ता तैयार है। दादा खाकर जाओ"। दादा भगवान ने कहा "उसका क्या करूं जो सामने घर में टेबल पर नाश्ता सजा कर बैठी है।"
दादा भगवान उठकर चल पड़े। आगे दादा थे, पीछे पीछे सारी संगत थी। सभी अचरज में आ गये। सामने वाले फ्लैट में योगी नाश्ता सचमुच टेबल पर सजा कर इन्तजार में बैठी थी। एक दिन पहले उसे पता पड़ा था दादा भगवान का सत्संग है वह आयेंगे। तभी उसने कहा था 'अगर मेरी श्रद्धा सच्ची है तो दादा को नाश्ता मैं खिलाऊंगी। शबरी ने सच्चाई से इन्तजार करी थी, तो श्री राम को आना पड़ा था।
कृष्ण कहते हैं "जितना जितना योगी मुझे याद करते है। मैं भी करता हूँ। जितना जितना प्रेम वह मुझ से करते है। मुझे भी करना पड़ता है।"

एक वृद्ध योगी प्रतिदिन दादा भगवान का सत्संग सुनने आता था। उसका हौसला बुलन्द रखने के लिए दादा भगवान उससे कहते "हरिजन कभी न बूढ़ा होए"। कुछ दिनो से उसका आना बन्द हो गया था। जब दादा भगवान को पता लगा कि वह बीमार है तो दादा भगवान खुद बस में उसे ज्ञान सुनाने जाने लगे। एक दिन बोरीवली में सत्संग के बाद दादा भगवान सीधे उसके घर आ गये। यह वृद्ध योगी अपनी आखरी स्वासों पर था। इसने दिल से अपने सद्गुरु को पुकारा था जो सीधा Connection लग गया और सद्गुरु पहुंच गये। वहां सभी हाजिर

करने का आग्रह कर रहे थे, पर सबकी बात को नकार करके दादा भगवान यहां पहुंच गये थे। बड़ी प्यारी पंक्तियां है "कौन कहता है कि दीदार नहीं होता है। इक बार हृदय से पुकारो तो सही, देखो कैसे वह साकार नहीं होता है"॥

भगवान का एक नाम पतित पावन है। दादा भगवान पूरे अद्वैत में थे। उनके लिए जात पात, छुआ-छात, अमीर गरीब कुछ माने नहीं रखते थे। दादा भगवान सबमें अपना आप देखते थे।

एक धोबन थी। घर पर रोज कपड़े धोने आती थी। दादा भगवान का ज्ञान यज्ञ तो चलता रहता था। उस धोबन ने सच्चाई से सिर्फ तीन दिन शुद्ध मन से दादा भगवान का ज्ञान सुना "सतगुरु नाम" सिर्फ एक बार। उसने तत्व को [illegible] कर लिया था। उन्हीं दिनों में हैजा फैला हुआ था। धोबन भी शिकार हो गई। उसके घर वाले आश्चर्य करते थे कि तकलीफ में होते हुए भी आखिर तक वह एक ही बात कहती थी "मैं आत्मा हूं। मैं शरीर नहीं हूं। मेरी मौत नहीं है। मैं आत्मा हूं"।

दादा भगवान की हजामत करने एक हज्जाम आया करता था। वह दादा भगवान से ज्ञान लिये बिना टलता नहीं था। कभी दादा भगवान घर से बाहर गये होते थे या विश्राम कर रहे होते थे तो यह नाई घन्टों बाहर चौखट पर बैठ कर इन्तजार करता कि खुदा का पैगाम लिए बगैर कैसे चला जाऊं? योगी ऐसे कहते हैं कि तुम्हें ज्ञान का वचन चाहिए था तो चाहे किसी के मुख से सुन लो। पर नाई ने कहा "ब्रह्मज्ञानी के मुख से निकला शब्द ही तीर की तरह दिल के आर पार होता है। दादा भगवान के मुख से वचन सुनकर ही इसे तृप्ति आती थी।

कुछ दिनों से वह नहीं आया तो दादा भगवान खुद उस से मिलने गये। वह पलंग पर बीमार पड़ा था। उस समय

बड़ी लगन से भजन गा रहा था "जब अपने ही घर में खुदाई है तो काबे में सजदा कौन करे?" उसने देखा दादा भगवान उसके सामने खड़े हैं। वह खुशी में मतवाला हो गया "मेरे दर्वेश। आप आ गए। मेरे खुदा। आप गरीब निवाज हो। गरीब के घर आ गये" उस नाई का आखरी वक्त करीब था। इसी से आत्मा ने आत्मा को पुकारा था। उसकी आखरी स्वांसे दादा भगवान की हाजिरी में ही रुख्सत हुईं। कैसा अजीब करिश्मा था।

दादा भगवान ~~निर्वा~~ निर्वासनिक थे। निर्विकारी थे। किसी को थोड़ा सुख देने के लिए वह खुद कष्ट सहन कर लेते थे। उन्हें अपने शरीर की तो फिक्र ही नहीं थी। I may die, you may live. वह इस सिद्धान्त के पुजारी थे। योगी किसी भी time ? वक्त बे वक्त दादा भगवान से ज्ञान सुनने आ जाते। अपने दुखड़े रोने आ जाते थे। दादा भगवान सेवा के लिए ever free रहते ever ready रहते।

एक गुरु भक्त था। दादा भगवान के ज्ञान से वह वैराग्य में आता जा रहा था। उसका मन जब अपनी स्त्री का स्पर्श चाहने लगता वह सीधा दादा भगवान के पास पहुंचता, चाहे कितनी रात हो चुकी होती थी। वह दादा भगवान के चरण पकड़ कर प्रेम में रोता। "दादा। मुझे सुजाग करो। मुझे बल दो। मुझे सहारा दो।" दादा भगवान कहते मैं तेरे लिए ही तो बैठा हूं। गुरु के संग से वह भी ~~निर्वा~~ निर्वासना हो गया।

एक योगी स्त्री के पेट में गोला हो गया था। डाक्टर ने उसे आप्रेशन (operation) को कहा था। असल में इसे भय डराता था कि क्योंकि यह निसंतान है, इसलिए इसका पति इसे छोड़ कर दूसरी शादी कर लेगा। दादा भगवान का ज्ञान, इसने सात दिन सुना तो इसको अन्दरूनी ताकत आ गई। जब डाक्टर ने इसका X-Ray देखा, तो पेट में गोला नहीं था। वह हैरान हो गया है कहा 'करामात' है जो अब इसको, आप्रेशन की तो जरूरत ही नहीं है।

"निष्कामता और करिश्मे | ज्ञान भया तो कर्म ही नाश"

1947 में देश का विभाजन होने वाला था तो दादा भगवान अपने कुछ योगी देवते को साथ लेकर तीर्थ यात्रा को चल पड़े। दादा भगवान त्रिकाल दर्शी थे। उन्हें मालूम था - क्या होने वाला है। इसी से उन्होंने सब कुछ खुशी से त्याग करके - अपना देश पहले ही छोड़ दिया।

दादा भगवान उदय पुर पहुँचे। साथ में भगवान श्री माँ थे। यहाँ ऐसा सत्संग होने लगा जो जंगल में मंगल हो गया। ब्रह्मज्ञानी अपने को शमा की तरह जलाता है तो शमा तक परवाने आप ही आने लगते हैं। भक्तों की संख्या दिन ब दिन बढ़ने लगी। लोग अपने अपने दुख लेकर, रोते हुए आते थे और ज्ञान के बाद हँसते हुए लौटते थे।

"दरबार में मेरे सतगुरु के दुख दर्द मिटाये जाते हैं।" उदय पुर के Civil hospital में एक डॉक्टर था। उसे guilt complex था। जिसके कारण उसकी नींद उड़ गई थी। दादा भगवान की सच्चाई देखकर उस डॉक्टर ने अपने past में किये पाप कर्म खोल कर बताये।

सरकार की तरफ से उसे free दवाईयाँ और injection, गरीबों के लिए मिलते थे। डॉक्टर उन्हें बेच देता था। और अपना profit बनाता था। इससे ठीक इलाज ना होने के कारण, कई गरीब मर जाते। अब डॉक्टर अपने को दोषी मानने लगा था। डॉक्टर ने कहा "रात को मुझे उन्हीं के चेहरे सपने में आते हैं। मुझे डर लगता है और मैं सो नहीं सकता हूँ।"

दादा भगवान कहते थे HATE THE SIN AND NOT THE SINNER पाप से नफरत करो - पापी से नहीं। गुरु शरण में पापी भी आ जाये तो वह भी पार लगाया जाता है। वह अज्ञान में, सपने से हुआ है। अब तुम्हारा अज्ञान नष्ट हो गया है। ज्ञान भया तो कर्म ही जाओ। पछताने से तुम्हारे सब पाप नष्ट हो गये हैं। डॉक्टर अपनी आत्मा में खड़ा हो गया उसे Normal Natural नींद आने लगी।

एक बार दादा भगवान बगीचे में बैठकर ज्ञान दे रहे थे। एक ने दादा भगवान के ऊपर मिट्टी से भरा गमला फेंक दिया। योगियों की आंखों के सामने उनके भगवान के साथ कोई ऐसी गिरी हुई हरकत करे? योगी emotion में आ गये। दादा भगवान एक रस थे। एक शब्द भी नहीं दिया। योगियों को शान्त रहने का इशारा करके - वाणी चलानी शुरू कर दी।

दादा भगवान को रोज नई नई धमकियां आने लगी। एक ने कहा "मैं shoot कर दूंगा।" एक ने कहा "मैं Balcony से नीचे फेंक दूंगा।" एक ने कहलाया कि यदि अब मेरे घर में आए तो मैं आग लगाकर जला दूंगा, इस पर दादा भगवान ने कहा कि "हमने लोहे की dress पहनी हुई है। आग क्या करेगी?"

दादा भगवान योगियों से भी कहते "तुम सच का नगाड़ा बजाते हुए चलो। डरो नहीं। जहां सच है - वहां कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।" दादा भगवान के दिल से मौत का डर तो उनके विद्यार्थी जीवन के दिनों से ही निकल हो चुका था। अब ज्ञान ने दादा भगवान को पूरा सेनानी बना दिया था। जो धमकियां भेजते थे, समझते थे दादा भगवान डर जायेंगे। दादा भगवान ने हर एक शरणागत का बीड़ा उठाया था और अन्त तक निभाया।

दादा भगवान ज्ञान सुनाने बेधड़क, उन्हीं के घर चले जाते। जिन्होंने धमकाया होता था। अचरज की बात थी कि वह सब घर पर मौजूद होते हुए भी अन्धे गूंगे हो जाते थे। दादा भगवान को कुछ कहने की किसी को भी हिम्मत नहीं होती थी। दादा भगवान के लिए तो सर्व मम रूपं ही था।

ब्रह्मज्ञानी के निश्चय के सामने तो पहाड़ को भी झुकना पड़ता है। योगी ऐसी करामत रोज देखते, जिससे उनकी श्रद्धा और विश्वास और दृढ़ हो जाता था।

## "निष्कामता और करिश्मे। मैं बेहद का मालिक हूं।"

दादा भगवान के ज्ञान की और निष्कामता की सुगन्ध दूर दूर तक पहुंच रही थी। पटियाला के राजा ने सुना तो दादा भगवान को बुलवा भेजा। उसकी रानी बहुत बीमार थी। वह हर आधे आधे घन्टे को उल्टी करती। सूख कर उसका शरीर पिंजर रह गया था। दादा भगवान के vibrations ऐसे थे कि उन्हें देखते ही रानी के मन में श्रद्धा हो गई। उसे लगने लगा मेरी बीमारी दूर हो जायेगी।

लगातार चार घन्टों तक दादा भगवान ने, रानी को ज्ञान सुनाया। रानी पूरी तवज्जह से, बिना हिले डुले सुनती रही। राजा को, सभी को अचरज हुआ। रानी को उल्टी नहीं आई। कैसे मुमकिन हो गया? राजा ने कहा 'बड़े से बड़े डाक्टरों से जो इलाज न [illegible] हो पाया, आप के ब्रह्मज्ञान से मुमकिन हो गया है। आप सचमुच कोई ऊंचे पहुंचे हुए सिद्ध [illegible] है।'

दादा भगवान को राजा अपनी रियासत दिखाने ले गया। जहां हद खत्म होती है। वहां रुक कर दादा भगवान ने कहा 'तेरी रियासत बस इतनी है। तू हद का मालिक है। मैं तो बेहद का मालिक हूं।'

दुनियां के नक्शे में हिन्दुस्तान का मुल्क है। उसमें पंजाब प्रान्त और फिर उसमें पटियाला की एक रियासत केवल एक बिन्दु मात्र है। 'यह मैं हूं। यह मेरा है' अपनी हस्ती का राजा को बड़ा अहम था। इस अहं को, दादा भगवान के शब्दों से चोट पहुंची थी। दादा भगवान ने कहा "तुम अपनी हस्ती को भूल देते हो। मैं कहता हूं, तेरी अपनी हस्ती और अलग है जो अपने नाम रूप से।"

एक श्रद्धालु योगी था। वह शराब पीने की अपनी एक आदत से बेबस था। वह दादा भगवान से ज्ञान सुनने आता था और रोकर कहता था 'मुझे इस बीमारी से छुटकारा दिलाये'।

दादा भगवान तो अपने योगियों का कष्ट दूर करने के लिए कोई भी हद लांघ लेते थे। शाम को जब उस योगी को शराब खाने में जाने की उत्कंठा उठती दादा भगवान उस योगी के पास चले जाते और उसके साथ शराब खाने में भी चले जाते थे।

बीच बीच में ज्ञान के दो चार वचन रमज़ से बोल देते थे। वह योगी लिहाज में और दादा भगवान के प्यार में शराब कम पीता और कभी कभी पीता भी नहीं। धीरे धीरे उस को, पीने की आदत ही छूट गई।

दादा भगवान को, 'लोग क्या कहेंगे?' इसकी परवाह नहीं थी एक योगी के साथ दादा भगवान picture चले गये। देखने वालों ने देखा ब्रह्मज्ञानी आज picture देखने आया है। पर सच्चा ब्रह्मज्ञानी बेपरवाह बादशाह होता है। picture के बाद उस योगी का विवेक खुल गया। उसने स्वयं कहा 'दादा! यहां आकर मुझे क्या मिला? तीन घन्टे बरबाद किए हैं। घर पर आप के ही ज्ञान के वचन सुनता। जब यह रस आते तो वह रस नहीं आवे।'

एक doctor योगी बताते हैं दादा भगवान को पहली बार मिले तो लगा यह एक सच्चे सिद्ध योगी हैं। मुझे इन्हीं की ही तलाश थी।

जैसे जैसे वह दादा भगवान के पास आकर ज्ञान लेते थे, उनकी अपनी डाक्टरी की practice में रुचि घटती जाती थी। अब डाक्टरी पैसे के लिए नहीं, सिर्फ निष्काम सेवा बनकर रह गई थी।

यह योगी बताते हैं कि ज्ञान के रस के मुकाबले में जगत के सब रस फीके हो गये थे।

इसी से उन्होंने अपनी चलती हुई practice बन्द करके dispensary ही उठा दी।

और अपना सारा समय ज्ञान के निष्काम यज्ञ में लगा दिया और आज भी ऐसी निष्काम सेवा में हैं।

दादा भगवान के ज्ञान के मुकाबले में सब और डिग्रियां छोटी पड़ जाती थीं।

एक विदेशी philosopher ने ठीक कहा था कि ओरिएन्ट देश में आप एक सच्चे ब्रह्म योगी हैं, क्योंकि दादा भगवान के मुख से निकला हर वचन असर करता था।

एक युवक योगी की ज्ञान की लगन लग गई थी। वह रोज दादा भगवान से ज्ञान सुनने आने लगा। एक दिन उसके पिता ने आकर कहा, इस का पढ़ाई में पहले से ही ध्यान कम है। पिछले साल फेल हो गया है। अब इधर [illegible] हो गई है तो इस साल भी फेल हो जायेगा। दादा भगवान ने कहा, आज से यह और अच्छी पढ़ाई करेगा। और सचमुच वह लड़का पढ़ाई में इतना चमका जो एक दिन Chartered Accountant बन गया। वह दादा भगवान के ही गुणगान करता था कि यह करिश्मा आप ने किया है।

10

## "निष्कामता और करिश्मे । (जीने की चाह । ")

एक श्रद्धालु योगी बीमार था। दादा भगवान का ज्ञान सुनने आ नहीं सकता था। उसके घर में सीढ़ियां थी। दादा भगवान सीढ़िया नहीं चढ़ सकते थे। दादा भगवान को कुर्सी पर बिठा कर सीढ़ियों से ऊपर और नीचे ले जाया जाता था। और दादा भगवान उसे ज्ञान सुनाने जाते थे।

कहते है खुदा का एक बन्दा प्यासा था। कुएं तक नहीं जा सकता था। बीमार था। तो कुएं को अपनी मर्यादा तोड़ कर उसकी प्यास बुझाने को खिसक कर आना पड़ा था।

Hospital में एक योगी बहुत बीमार थी। उसे लगने लगा था कि मैं अब ठीक नहीं होऊंगी। मैं अब जल्दी मर जाऊंगी। उसने अपनी बेटी से कहा कि मेरी इच्छा है कि मैं अपने प्राणों का त्याग अपने घर पर ही करूं।

आखरी इच्छा जानकर, बेटी ने असपताल के सब bills की payment कर दी और discharged certificate भी ले लिया।

मां बेटी सामान लेकर कमरा छोड़ने ही वाले थे कि दादा भगवान आ गये। जो इतनी बीमार थी, वह योगी दादा भगवान को देखकर ज़ोर ज़ोर से हंसने लगी। वह इतनी खुश हो गई उसमें जीने की चाह पुनः उजागर हो गई।

दादा भगवान ने उसका बन्धा हुआ सामान खुलवाया और कुछ दिन hospital में रह कर इलाज कराने की सलाह दी। जो दवा पहले असर ही नहीं कर रही थी, वह अब फायदा करने लगी थी। योगी ठीक होने लगी। दादा भगवान उसे ज्ञान सुनाने रोज़ hospital में जाते थे। उसे नया जीवन मिल गया। "यह जीवन अब तेरे लेखे" वह अपने गुरु के रंग में रंग गई। वहां के नर्स डाक्टर सभी हैरान थे। "मौत के मुंह में से यह कैसे बच गई"। यह करामत दादा भगवान के ज्ञान की थी। जिसने मुर्दे में वापस जान डाल दी थी। दादा भगवान कहते "ज्ञान में नर से नारायण, कांकर से कंकर, मुर्दे से मर्द बनाने की ताकत होती है।

दो बहनें दादा भगवान से रोज ज्ञान सुनने आती थीं। उनके भाई को अच्छा नहीं लगता था कि यह रोज परपुरुष के पास जाती हैं। उसमें आखिर कौन सा, आकर्षण है जो यह, जाये बिना रह नहीं सकती - यह देखने को एक दिन यह भी गया और सत्संग के पीछे बैठ गया। उस दिन दादा भगवान की वाणी ऐसी चली कि उसके हृदय के सारे तार झंकृत हो गये। उस रात वह सो ना सका दादा भगवान की आवाज - दादा भगवान के वचन उसके कानों में गूंजते रहे। उसे एक ही लिव थी कब सुबह होवे - वह दादा भगवान के पास आकर माफी मांगे। उस दिन से यह भी, अपनी दोनों बहनों की तरह श्रद्धा से रोज ज्ञान सुनने जाने लगा। गुरु तो अमानत लेकर बैठे हैं - लेने वाला ही अपना हक लेने नहीं जाय, तो फिर गुरु क्या करे? निराकार क्या करे?

दादा भगवान के शब्दों में माया प्रारब्ध से मिलता है। पर ईश्वर प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ करना पड़ता है - ईश्वर दयालु है - कृपालु है, तू एक कदम आगे चल वह दस कदम आयेगा पर तू एक कदम चल तो सही"।

एक बार दादा भगवान की वाणी में चला " हर बात का शुकराना करो। पेशाब भी करो तो भी शुकराना करो। उस दिन एक व्यक्ति जो पहली बार सत्संग में आया था, इस बात को मजाक में लेकर हँसने लगा।

भगवानजी कहते हैं "तुम साकार के वचनों की बेकद्री करोगे तो निराकार तुमसे पूरा हिसाब लेगा"।

कुछ दिनों में उसकी KIDNEY में पथरी हो गई। उसका पेशाब रुक गया। बहुत तकलीफ में आ गया। अब उसे दादा भगवान के वचन याद आये। दादा भगवान के शब्द हैं " अत्यन्त दुःख में गुरु [illegible] और गुरु के ज्ञान की कदर होती है "। उसे पछतावा [illegible] । [illegible] मांगी और श्रद्धा में आ गया।

दादा भगवान के पास एक लड़की आई। उसे बीस साल से [illegible] की बीमारी थी। वह Bed rest पर थी।

दादा भगवान ने उसे प्यार किया। उसके खाने पीने की अच्छी संभाल की। उसकी सेहत में सुधार आने लगा।
दादा भगवान के पास सब बीमारियों का एक मुफीद इलाज था। प्रेम। प्रेम। प्रेम।

शरीर से ठीक हो जाने पर भी यह लड़की मन से कमजोर थी। उसके मन में डर बैठ गया था कि मैं, उठूँगी तो गिर जाऊँगी और फिर बीमार हो जाऊँगी। दादा भगवान ने समझ लिया - जब तक इसके अन्दर भय है - वह ठीक नहीं हो सकती। उसकी सारी सेवा पलंग पर ही होती थी। दादा भगवान ने कहा, "अब तू अपनी सेवा खुद कर।" उसे प्यास लगी थी। दादा भगवान ने कहा "अब तू खुद Pump कर और पानी निकाल कर पी।" "मैं गिर जाऊँगी।" दादा ने कहा "मैं गिरने नहीं दूँगा। मैं तुझे संभाल लूँगा।" साधारण शब्दों में गुरु कितनी गहरी बात कह देते हैं। जीव खुशी में आ जाता है कि अब मेरे यौगिक (?) क्षेम का भार मेरे गुरु ने ले लिया है।

बारिश तो सब जगह एक जैसी होती है। धरती की अपनी तौफीक है कि कितना पानी जज़्ब करती है।
दादा भगवान के वचनों की ताकत से वह योगी उठी। उसने Pump किया - पानी निकाला।
वह गिरी नहीं थी। उसे ताकत आ गई। फिर, सुबह शाम वह दादा भगवान और भगवान दादा लक्ष्मी जी (?) के साथ सैर करने जाने लगी।

एक बार बीमार मैत्री (?) को डॉक्टर ने कहा 'पहाड़ (?) पर जाकर, तुम्हारी बीमारी जल्दी ठीक हो सकती है', दादा भगवान उसे पहाड़ पर ले गये और कुछ ही दिनों में वह ठीक हो गई। ब्रह्म ज्ञानी (?) की निष्कामता (?) के साथ करिश्मा तो जुड़ा ही रहता है

11

## "दादा भगवान की गाली"

दादा भगवान को हर एक योगी के लिए करुणा होती थी कि वह जल्दी से जल्दी आत्मनिष्ठा में आ जाये। इसलिए, उन्हें इलाज के लिए दादा भगवान को कभी कभी तीखा शब्द बोलना पड़ता था और कभी कभी गाली भी देनी पड़ती थी।

एक दिन एक योगी ने दादा भगवान से कहा "दादा आप गाली नहीं दिया करो।"

दादा भगवान ने कहा "तुम यहां ज्ञान सुनने, अपने को बताने आते हो या मुझे सिखाने आते हो? मैं तो सिर्फ गाली देता हूँ, हम लोगों को लगायेगा।"

कुछ दिन बाद एक दूसरे योगी ने यही बात कही "दादा आज वाणी में आपने दस बार गाली दी है। आप गाली नहीं दिया करो।"

दादा भगवान ने जोर से कहा "आज एक घण्टा वाणी चली है। उसमें सौ बार आत्मा आत्मा कहा। वह इसने catch नहीं किया और चार बार गाली दी तो वह उसके अन्दर चली गई है। तुम अपने से यदि विचार करोगे तो जानोगे "सचमुच मैं गाली के ही लायक हूँ"।

गुरु तो सदा अकर्ता है। मौन में रहता है। एक शब्द भी नहीं बोलता, कोई चुन कर किसी एक को गुरु का वचन मिलता है। जिस से उसकी हस्ती मिटती है और मस्ती बढ़ती है।

बीमारी जितनी बड़ी है - डाक्टर को उसी हिसाब से इलाज करना पड़ता है। जब कड़वी दवा असर नहीं करती तो वह injection देता है और कभी कभी तो operation भी करना पड़ता है।

गुरु को दर्द होता है कि जैसे भी होवे, इन्हें अपने देह-अध्यास के दीर्घ रोग से जल्द से जल्द छुटकारा मिल जाये। इसी के लिए, गुरु खुद तपस्या करता है।

दादा भगवान के पास कोई नया जिज्ञासु आता तो दादा भगवान उन्हें उसको ज्ञान सुनाते हुए थकते नहीं थे। वह जिज्ञासु कहते "अच्छा। तू कल फिर आना"---

उसके लिए दादा भगवान home work करते। उसकी जरूरत के points इकट्ठे करके लिख कर रखते थे।

दादा भगवान बड़े निपुण ARTIST थे

नए जिज्ञासु को पहले मीठा मीठा खिलाते। जब देखते कि अब इसमें हजम करने की ताकत आ गई है, तो उसे कड़वी dose भी पिला देते थे।

दादा भगवान कहते "ज्यादा लाड़ प्यार में बच्चे बिगड़ जाते हैं। कभी कभी उनके कान भी खींचने चाहिए।"

सच्चा जिज्ञासु गुरु की शरण में अपने सुधार के लिए आता है। इसलिए उसे गुरु का प्यार, गुरु की फटकार दोनों कुबूल होते हैं। वह गुरु की गाली मोहन थाल मान कर स्वीकारता है। वह कहता है "शुक्र है जो मैं गुरु की नजर में हूँ। अब मैं जरूर सुधरूंगा" वह जानता है "उसके अन्दर का गन्द नाश करने के लिए ही गुरु को गर्म साख देनी पड़ती है।"

"ज्यों ज्यों सोना ताइए त्यों त्यों होवे शुद्ध
सतगुरु ऐसे जीव को निर्बल करें बुद्ध।"

दो योगी भक्त कई सन्तों के पास, ज्ञान सुनने जाती थीं। एक दिन उन्हें दादा भगवान का सत्संग सुनने का मौका मिला। कोई विरला बड़भागी है जिसे, ब्रह्मज्ञान सुनने का अवसर मिले। उन्हें दादा भगवान का ज्ञान अच्छा लगा। वह रोज आने लगीं। एक दिन उन्होंने प्रश्न किया "हम गृहस्थ हैं तो जगत में व्यवहार तो करना पड़ता है।"

यह दोनों जिज्ञासु चीटी की चाल से ज्ञान धीरे-धीरे ले रही थीं। गुरु की करुणा थी कि यह अपना काम जल्दी पूरा करें। गुरु को मौके की तलाश रहती है। दादा भगवान ने उन्हें बड़ी तीखी वाणी दी - गाली दी। कहा "इतने दिन ज्ञान सुनते हो गए - अभी तुम्हारे अन्दर जगत और जगत का व्यवहार पड़ा है।" संगत ने देखा, उन्हें डांट मिली, पर उन दोनों के अन्दर का विवेक जाग गया। उनकी सोई हुई सुरति जाग गई थी। अन्दर ही अन्दर गुरु ने उन्हें मालामाल कर दिया था वह दोनों

आनन्द में आ गई।

एक बार, दादा भगवान से किसी ने शिकायत की इसने मुझे गाली दी है और कहता है "दादा भी तो गाली देता है।"
इस पर दादा भगवान ने वाणी में कहा "दुर्वासा ऋषि गाली देते थे। विश्राप भी देता था। परन्तु उसपर कोई दोष नहीं आता था तो इसका कर्म भी नहीं बनता था --- गाली देने का हक सिर्फ गुरु को है। देह-अध्यासी, गुरु की रीस नहीं कर सकता।

एक बार एक ने कहा "दादा। आप मर्द हैं फिर मर्दों को ही गाली देते हो?"
दादा भगवान निपुण कलाकार थे। उन्हें पूरा मालूम रहता था किस-को किस तरह संभालना है। वाणी में वह नीति मार भी दे देते और फिर प्यार भी कर लेते - जिस से सामने वाला तृप्ति में आ जाता।
दादा भगवान ने कहा "स्त्रियों को गुलाम समझना और उनपर जुलुम करना, यही तुम्हारा मर्द कहलाना है? मैं गाली दूँ तो तुम्हें दूँगा।"
फिर दादा भगवान ने साथ में कहा
"मर्द को पुरुष कहते हैं। पुरुष, जो देह से ऊपर है, गाली, देह को मिलती है और तू तो देह है ही नहीं।
दादा भगवान कितने हुनर से किसी को भी नीचे से उठाकर ऊपर खिंच लेते थे। वह अपने निश्चय में खड़ा हो जाता। वह समझने लगता "मेरे सिर पर तो आत्मा का ताज है। अब मैं नीचे देह अध्यास में क्यों आऊं?
इस तरह दादा भगवान मर्दों का सुधार करके indirectly स्त्रियों का सुधार भी कर रहे थे। [illegible]
[illegible]
दादा भगवान यात्रियों को कहते कि "सब के साथ सदा मीठा बोलोगे तो ही तुम्हारा देह अध्यास जायगा।
"मुख विष रख बिसरी
तो नाली बजे बिसरी

हरिराम नाम का एक योगी दादा भगवान से ज्ञान सुनने आता था। वह सच्चा जिज्ञासु था, पर जगत के माया जाल में फंसा हुआ था।

एक दिन दादा भगवान ने उसे गाली दी

"तू हरिराम नहीं। तू हरामी है तुझे जगत भी चाहिए - तुम्हें जगदीश भी चाहिए"।

दादा भगवान की गाली रामबाण का काम कर गई उस दिन से उसे लगन लग गई।

वह दादा भगवान के चरण पकड़ कर रोता "दादा मेरा नाम सार्थक कर दो जो मुझे सिर्फ हरि में आराम मिले"

17. एक योगी ने दादा भगवान से request की

दादा आज मेरी कुड़मनी आ रहा है। Please आज आप गाली नहीं देना। दादा भगवान ने कहा 'अच्छा' और उस दिन वाणी में सब से ज्यादा गालियां थीं। हर गाली पर इस योगी का चेहरा पीला पड़ जाता था और वह अपना कुड़मनी के चेहरे का भाव देखता थी। सतसंग खत्म हुआ।

कुड़मनी खुश थी। ज्ञान की अमानत गुरु के पास होती है। जिसे जब और जितनी मिलनी होती है। कुड़मनी ने कहा मुझे सारा सत्संग बहुत अच्छा लगा। कल फिर आऊंगी। वह बीच बीच में गालियां देते हैं पर वह जैसे माँ, प्यार में, अपने बच्चे को सुधारने के लिए देती है। ऐसा लगता है"

सच्चा जिज्ञासु कहता है गुरु झिड़के तो मीठा लागे। वह जानता है गुरु के तीखे शब्द से उसके विकार जायेंगे।

एक योगी ने दादा भगवान से कहा

"दादा आपकी गाली से खुशहाली आती है। आप मुझे गाली देवें"।

दादा भगवान ने कहा 'तू लाख रुपये दे तो भी हम तुझे गाली नहीं देंगे।

हमारी गाली की अपनी कीमत है"

"दुःख दर्द विढे विसरी जे सतगुरु दर इंदे"

॥ स्त्रियों का उद्धार ॥

वह ज़माना था जब स्त्रियों पर हर मुमकिन अत्याचार किए जाते थे। जब अत्याचार बर्दाश्त के बाहर हो जाते तो स्त्रियां आत्मघात कर लेती थीं। कुएं में डूब कर अपनी जान देती थीं। या फिर अपने को आग लगाकर जला लेती थीं।

उन दिनों में हैदराबाद सिन्ध में दहेज की बड़ी बुरी प्रथा थी। शादी में लड़की को कम दहेज मिलता या त्योहारों पर मायके से कम आता तो लड़कियों पर ससुराल वाले और भी ज्यादा जुल्म करते।

कितने दुख की बात है कि औरत ही औरत की दुश्मन बन जाती है। सास ननदें ही खास दुर्व्यवहार करती हैं।

उन दिनों में विधवाओं की दशा भी बड़ी दयनीय थी। उन्हें पशु जैसा समझ कर उनसे पशु का काम लेते और उनसे पशुओं जैसा ही व्यवहार किया जाता था। दोबारा शादी करना वर्जित था। इससे सारी उमर उन्हें वैधव्य की अग्नि में जलना पड़ता था। "ढोर गंवार शूद्र और नारी,

यह सब मारन के अधिकारी"

उन दिनों इतना पर्दा था कि औरतों को घर की चारदीवारी में ही रखा जाता था। वह दहलीज नहीं लांघ सकती थीं।

सारे दिन में स्त्री को मिलता क्या था? रूखा सूखा खाना गाली-मार और फटकार ही मिलती थी।

स्त्रियों की ऐसी दशा देखकर दादा भगवान का हृदय करुणा से विह्वल हो जाता। उन्होंने संकल्प ले लिया "स्त्रियों का उद्धार करना है। उनमें जागृति और साहस पैदा करना है।"

इसके लिए दादा भगवान ने स्त्रियों को उनकी जरूरत का ज्ञान देना शुरू किया।

"घर में सब से प्रेम करो। सब की सेवा करो पर जुल्म नहीं सहो। जुल्म करना पाप है। जुल्म सहना भी पाप है।

दादा भगवान स्त्रियों को इकट्ठा करके, कई बार जुलूस भी निकालते थे। दादा भगवान का ज्ञान शान्ति देता। सुख पहुंचाता। ज्ञान सुनने स्त्रियां आना भी चाहती थी। पर दादा भगवान का चोला पुरुष का था। इसी से उन पर पाबन्दियां बहुत थीं। स्त्रियों को ज्ञान सुनाने के लिए, कोई Hall या आश्रम तो था नहीं तो दादा भगवान खुले मैदान में या किसी बाग बगीचे में बैठकर स्त्रियों को ज्ञान सुनाने लगते थे। इससे बहुत निन्दा होने लगी। लोग कलंक लगाते और हर किसम का कीचड़ उछालते थे। स्त्रियों की ऐसी दर्दनाक स्थिति के जिम्मेदार मर्द भी थे। इसी से दादा भगवान मर्दों को गाली निकालते थे।

मर्द औरत को बेजुबान जानवर समझते हैं। अपना हक समझ कर उस पर हुकूमत करते हैं।

इसीलिए लड़कियों को किसी बात में उत्साहित नहीं किया जाता था - जो प्यार स्त्रियों को घर गृहस्थ में प्राप्त नहीं था वह उन्हें दादा भगवान से मिला।

उनवानी नाम से बड़ी उम्र की एक योगी ने दादा भगवान से ज्ञान लिया। लखनऊ में सब को ज्ञान सुनाने लगी थी। अकेली थी। सालों से उसे Hill Station जाने की वासना थी। किससे कहती? कौन लेकर उसे जाता? उसने दादा भगवान से अपने मन की इच्छा बताई। दादा भगवान ने योगियों को तैयार किया! पहली टिकट 'उनवानी' के नाम की आई। Hill Station पर उसे घुमाया - ज्ञान सुनाया - प्यार किया। वह तृप्त होकर वापस आई। एक एक योगी को कहती थी

"जिस का कोई नहीं उसका भगवान है"

दादा भगवान ने किसी को पत्र लिखा और योगी से कहा कि यह पत्र अभी post करके आओ। local post निकल चुकी थी। दादा भगवान ने कहा 'जाकर post करके आओ। यह पत्र आज की डाक से निकल जाना चाहिए'। कुछ दिनों में दादा भगवान के इस पत्र का जवाब आया। 'दादा! आप का [illegible] मिला और मेरी जान बच गई है। आप का पत्र नहीं

मिलता तो मैंने आत्मघात कर लिया होता।

दादा भगवान ने किसी के पत्र का जवाब जल्दी पहुंचाना होता था तो फोन कर देते थे। एक योगी टेलिफोन ऑपरेटर थी। उसके पास जाकर request करते - जल्दी मिला दे नम्बर और उससे सेवी बात करा दे।

यह योगी अपनी Salary में से bills payment करा लेती। दादा भगवान किसी का दुख देख कर यही चाहते 'कैसे इसका दुख दूर हो'। एक जसी नाम की योगी का पति शान्त हो गया। उसके पांच बच्चे थे। ससुराल में या मायके में उसे संभालने वाला कोई नहीं था। वह सारा दिन रोती और बच्चों की चिन्ता करती। दादा भगवान ने उसे निराकार में टिकाया। वह खुश रहने लगी। उसकी गृहस्थी सुधर गई। बच्चे पल गए और अच्छे settle हो गए। योगी कहती "सब गुरु कृपा है। दादा भगवान कहते 'हवा आई। मच्छर गया। प्रकाश हुआ अन्धेरा गया। तूने ही मेहनत की है। ज्ञान उठाया है।'

दादा भगवान के ज्ञान से निर्बल, सबल बन जाता। पति वाली, पति के चले जाने के बाद - यह भूल ही जाती थी, कि कभी वह पति वाली भी थी वह कहती "मुझे और कौन सा आधार चाहिए। मेरा सच्चा साईं बैठा है न। दादा बैठा है ना।"

दादा भगवान के पास एक ज्ञानी दादी, ज्ञान सुनने आती थी। उसकी सोहबत से दादी लाली भी आने लगी। दोनों ननद भाभी थीं। दोनों के पति नहीं थे। दोनों को ज्ञान का रंग ऐसा चढ़ा कि "रंग दीनी मेरी चुनरिया। हो गई लालो लाल।" ज्ञान के बाद, वह दोनों अपने दुख दर्द भूल गई।

"दुख दर्द विदे विसरी। जे सतगुरु दर ईंदे।"

यह [illegible] जब भी आती थी तो दादा भगवान का ज्ञान ऐसा चलता कि वक्त का ध्यान ही नहीं रहता था। घड़ी की सुइयां घूम कर कहां से कहां तक सरक जाती थीं। सुबह से शाम हो जाती। सभी अडोल बैठे रहते। किसी को भूख प्यास की सुध बुध ही नहीं रहती थी। जैसे कलजा का आकर्षण था। दादा भगवान के ज्ञान का वही

वशीकरण आकर्षण था। मर्द औरत सभी गोपियों की तरह खिंचे चले आते थे। और फिर जम कर बैठे रहते थे। एक बार आधी रात को ज्ञानी दादी और लाली दादी घर से निकल पड़ी। दादा भगवान के पास आ रही थी। रास्ते में पोलिस मैन ने रोका 'मालुम है? क्या वक्त है?' और उसने उन्हें वापस लौटा दिया।

एक योगी Pakistan से आई। उसका पति वहां शान्त हो गया था। रोती हुई दादा भगवान के पास पहुंची। दादा भगवान ने उसे बुडा लिया "शर्म कर। जो था ही जाने वाला - वह चला गया है तो तू रोती है?

तुमने क्या समझा था - वह सदा रहने वाला है?" वह योगी कहती है 'मेरा रोना एक दम बन्द हो गया और अन्दर विवेक ने कहा, "जो जन्मा है - एक दिन मरना ही था तो वह मर गया" दादा भगवान ने झट में कहानी ही खत्म कर दी। योगी अनपढ़ है पर कहती है। दादा भगवान ने प्यार में ज्ञान के साथ साथ शास्त्रों का ज्ञान भी दे दिया है।"

एक योगी की सात बेटियां थी। उसे चिन्ता रहती थी कि इन की शादियां कैसे होंगी?
दादा भगवान ने कहा 'मेरे चार बेटे हैं तेरी चार बेटियों की समस्या तो हल हो गई - बाकी तीन की गिनती कर उनको भी कोई आकर, आदर से ले जायेगें तू चिन्ता नहीं कर।' और उसी दिन से वह योगी की चिन्ता खत्म हो गई।
"मेरी चिन्ता हरि करे - जिस उपजाया जग।"

जाकार्ता इन्डोनेशिया से सुलक्षणी नाम की एक योगी अपने पति का इलाज कराने बम्बई आई। उसके पति को कैंसर था। इसी से दोनों बड़े शोक ग्रस्त थे। दादा भगवान ने उन्हें प्यार प्यार में ज्ञान सुनाया। दादा भगवान का जीवन तो दूसरों को सुख देने के लिए - दूसरों को शान्ति

देने के लिए कुरबान था।

भगवान जी, सायन से रोज़ कोलाबा तक ज्ञान सुनाने जाते थे। यह सब कष्ट उन्होंने अपने ऊपर ले ली थी। आना जाना bus से होता था। सुनने वालों को शान्ति मिल रही थी। इससे भगवान जी को तनिक भी अपनी तकलीफ महसूस ही नहीं थी। जब यह भाव में - भजन गाते थे तो वह दोनों योगी अपना काम, चिन्ता भूल कर मस्ती में नाचने लगते थे।

दादा भगवान के शब्दों में "दुःख अज्ञान के कारण समझ में आते हैं। गुरु अज्ञान का नाश कर देता है - तो दुःख सहित यह शरीर ही भूल जाता है।"

उन दोनों योगियों की link दादा लक्ष्मी से, दोनों से दादा भगवान से और भगवान से जुड़ी हुई थी।

दादा भगवान ने एक बार वचन दिए "जबरदस्त दुःख लगने से इन्सान में परमात्मा की प्यास बढ़ती है और अन्दर वैराग्य आ जाता है और दुःख दास बन जाता है"।

एक दिन दादा भगवान का सत्संग बोरिवली में था। सत्संग के बाद उस योगी ने सबके नाश्ते का इन्तजाम किया हुआ था। दादा भगवान ने नाश्ता नहीं किया और भगवान दादा लक्ष्मी के साथ सीधा कोलाबा आ गये। उन्हें साक्षात सामने देख कर, सुलक्षणी ने कहा "योगी अन्तिम श्वासों पर है। अभी इसने आपको याद किया था और आप यहाँ पहुँच गये।" दादा भगवान ने योगी का सिर अपनी गोद में रखा और हरि ॐ, हरि ॐ, हरि ॐ की धुनी लगाई और योगी आत्म में ही समा गया।

"गुरु ना मिलता तो क्या होता"

ऐसी परीक्षा की घड़ी में सुलक्षणी माता धीरज में रही। बाद में, दादा भगवान की वाणी में आया "भक्त की अकल ठिकाने रखने के लिए भगवान उससे उसकी प्रिय चीज़ खींच लेता है। और वापसी में भक्त को ज्ञान का और आनन्द का सच्चा खजाना दे देता है।"

February 2000 में सुलक्षणी माता अपने पूरे परिवार को साथ लेकर भगवान जी ... को मिलने और मिलाने आई। श्रद्धा से परिवार वालों ने गुरुदेवजी के चरण स्पर्श किए - नमस्कार किया। सायन रतन का वह नज़ारा अपने में अनुपम था जब सुलक्षणी माता पूरे हक से, प्यार से - प्रभु के गले लग गई। प्रेम में कानून नहीं होता "तू मेरा मैं तेरा" यह प्रेम और समर्पण का भाव रहता है बस।

सुलक्षणी की आँखें गंगा जमना बहा रही थी। शब्द नहीं थे। पर दोनों के हृदय में दादा भगवान विराजमान थे। दोनों की आँखों के सामने भी दादा भगवान ही थे। भगवान जी ठीक कहते हैं "हम तो दादा भूलता ही नहीं है।" सुलक्षणी माता अपने PAST में चली गई थी, जब वह और भगवान जी ... , दोनों बैठकर दादा भगवान के मुख से ज्ञान सुनते थे। भगवान जी की आँखें तरल हो आई और उन कमल नेत्रों से भी मोती झरने लगे।

उसी सुबह भगवान जी ने मीरा सन्त से कहा था मीरा। इन आँखों का पानी बिल्कुल सूख गया है। यह कभी रोई ही नहीं है।"

गीता में कृष्ण ने कहा है "जितना जितना भक्त मुझे याद करता है उतना उतना मैं भी उसे याद करता हूँ। जितना जितना प्रेम वह मुझे करता है उतना उतना प्रेम मुझे भी उसे करना पड़ता है।" सुदामा के मिट्टी सन मैले पाँव भगवान कृष्ण ने अपनी अश्रुधारा से धोये थे। सुलक्षणी माता से गले मिल कर भगवान जी की आँखों में प्रेम के ... देख कर प्रेमी भक्तों का प्रेम भी उनकी आँखों से जल निकला था।

"परीक्षाएं"

परीक्षा के बिना बच्चा क्लास ऊपर नहीं चढ़ेगा। दादा भगवान कहते जीवन में दिक्कतें आयेगी उन्हें परीक्षा समझकर पास करते रहें। जो कहा, वह रहनी में करके दिखाया। दादा भगवान ने [illegible] से बड़ी परीक्षाएं दी, और सदा pass हुए। दादा भगवान कहते असहनीय पीड़ा में भी मैं कहता हूं इसमें छिपी हुई भलाई है।

यही कारण है कि उन्हें कभी शिकायत नहीं हुई। ना ईश्वर से - ना अपनी प्रारब्ध से और ना ही जगत वालों से। भगवान लालजी साईं ने दरवाजा बन्द कर दिया था। जोर शोर देने वाला सच्चा बन्दा एक हारबेचा था, जो अपने गुरु के ज्ञान का वारिस बना।

दादा भगवान सदा एक रस रहे। उन्होंने माया के दोनों रंग देख लिए थे और दोनों अवस्थाओं की मौज ली थी। शहंशाही थी तो वह शहंशाह बन कर चले। घर वालों ने उनके नाम पर कुछ भी रहने नहीं दिया था। तो बिना कोड़ी भी वह बादशाह होकर रहे। व्यापार में लाखों का लेन देन करते थे और ऐसा समय भी आ गया था जो जेब में bus के पैसे ना होने से उन्हें योगियों को ज्ञान सुनाने पैदल जाना पड़ता था। वक्त मेहरबान था

दादा भगवान के सूट शर्ट - लंदन से सिल कर आते थे। जब वह अपने घर की balcony में आते। रात को बारिश आती तो अपना पुराना raincoat ऊपर डाल कर बचाव कर लेते। ऐसा भी होता है। "ऐसा भी होता है"

दादा भगवान कहते ऐसा भी होता है।

दादा भगवान हर रजा में राजी रहते थे

जब भी मुश्किल आती वह कहते Nothing new under the sun.

दादा भगवान कहते सब लीला है खेल है। तिलस्म है।

[illegible] कहते हैं हे राम जी। जगत तो बना ही नहीं है, सब मन की कल्पना है।

दादा भगवान अपने योगियों को वासना काटने के लिए उन्हें मेलों में, नुमाइशों में लेकर जाते। कपड़ों की, खाने पीने की दुकानों के आगे रुक कर उन्हें कहते "तुम्हें जो चाहिए खरीद लो"। योगी की स्थिति जान कर कि यह कहां खड़ा है। दादा भगवान वहीं से उसे आगे बढ़ाते थे।

दादा भगवान बगीचे में लेकर जाते। योगी सुन्दर वातावरण में खुशी दिखाते - चटाईयां बिछाते कि मौज लेंगे। दादा भगवान कहते उठो। उठो दूसरी जगह चलेंगे। दादा भगवान के शब्दों में "माया में विश्राम नहीं है। यह लुभाती है। इसके शिकंजे में जो आ गया, यह उसको गला दबोच लेती है - प्रकृति निर्दोष है पर प्रकृति में भी नहीं अटकना है।"

दादा भगवान योगियों के साथ कश्मीर गए। Bus से लम्बा सफर था। आस पास के सुन्दर नजारों से योगी बड़े खुश हो रहे थे। दादा भगवान ने कहा कश्मीर देख लिया अब अगली bus से वापस चलते हैं, योगी मिन्नत करने लगे पर भगवान जी... के लिए भगवान का वचन आज्ञा के समान था।

भगवान जी वापस चलने को तैयार हो गये। दादा भगवान देखना चाहते थे कि इन पर क्या प्रतिक्रिया होती है, पर कभी भी कुछ Re-action नहीं होता था। बड़ी से बड़ी बात पर भी, उनके चेहरे पर एक लाइन नहीं आती थी। भगवान जी के लिए important बात दादा भगवान का वचन था। बाकी उनके लिए क्या कश्मीर - क्या माथेरान क्या बम्बई। सब एक ही था। पांच तत्व की प्रकृति जो वहां थी वही यहां थी। देखना क्या था। दादा भगवान परीक्षा लेते और देखते कि योगियों ने अपना देह-अध्यास कितना मिटाया है? यह गुरु के वचन पर कितना मिटते हैं?

सब इकट्ठे बैठे थे। दादा भगवान ने बीच में बैठी एक लड़की को कहा "तू उठ और सीधी कोलाबा चली जा" उसका कोलाबा जाने का कोई अभिप्राय ही न था, पर वह उठ कर कोलाबा चली गई।

एक बार एक योगी बम्बई से इजाजत लेकर दो रात रहने माथेरान आया। बाबा भगवान अपने योगियों के साथ वहां रहे हुए थे।

नाश्ते के बाद बाबा भगवान ने उससे कहा "तुम आज बारह बजे की गाड़ी से वापस बम्बई चले जाओ।" उस योगी का चेहरा पीला पड़ गया "मुझ से कुछ गलत हो गया है?" उसका मन [illegible] पर बाबा भगवान को जो सत् वचन कह कर जाने की तैयारी करने लगा। बाबा भगवान ने उसे बुलवाया। और कहा "दोपहर का खाना खाकर, दो बजे जाना।" जो सत् वचन कह जाने लगा तो बाबा भगवान ने कहा "ठीक है, कल ही चले जाना।" उस योगी की परीक्षा चल रही थी। यह गुरु और भक्त की आपस की बात थी। देखने वाले तो अपना guess work करते रहते हैं।

ऐसे ही बाबा भ० एक योगी को प्यार करते। उसे साथ में बिठाते, घुमाते, फिराते, और दूसरे योगी की तरफ आंख उठा कर भी नहीं देखते थे। बाद में बाबा भगवान सबक पक्का करवाते कि "सामने वाले में कौन है, तो ही तो आई 'मैं ही तो हूँ'"। दो लड़कियां बैठी थीं। एक को सेब काट कर बड़े प्यार से फाड़ी फाड़ी करके खिलाया और दूसरी को पूछा भी नहीं। बाद में पूछा "तेरे मन में क्या चला।" उसने कहा "मेरा मन apple में था कि बाबा मुझे भी देवें।" बाबा भगवान ने उसे हक से डांटा "तुम यहां apple खाने आते हो या ज्ञान सुनने? सब मुख मेरे ही तो हैं। तुम हैड का ज्ञान कब लोगे?"

एक योगी विदेश से आया। एक ही दिन था। अगले दिन की वापिसी टिकट थी। उसकी परीक्षा के लिए बाबा भगवान ने कहा "तुम अपना टिकट वापस कर दो" और [illegible] ने वचन पाला। एक भक्त था - बाबा भगवान से सदा विनती करता - "मेरे घर आओ जो मुझे आप की सेवा का मौका मिले।" उसने [illegible] किसानी का [illegible] तार भेजा। बाबा [illegible] अपने योगियों के साथ पहुंचे। बड़ा शहर था। योगियों की शहर घूमने की इच्छा थी। भगवान की [illegible] तो बाबा भगवान की

परछाईं थे। उनका एक अहम हिस्सा थे। जहां दादा भगवान वहां भगवान जी होते थे। शाम को दादा भगवान ने Host से कहा आज ही रात, को हमारी वापसी का इन्तजाम कर दो। योगी मिन्नत करने लगे। दादा नया शहर है, नए लोग हैं - मन्दिर है महल है - हम घूमेंगे।

दादा भगवान गौर से भगवान जी का चेहरा पढ़ रहे थे। एक रस। शान्त थे।

'तुम गुरु को समझो, गुरु को पाओ
गुरु के साथ मिल कर, गुरु का रूप हो जाओ'

दादा भगवान Total निरिच्छा थे। भगवान दादा लक्ष्मी Total निरिच्छा थे। एक सिक्के के दो तरफ। एक बार दादा भगवान का सत्संग खत्म हुआ तो घरवाले योगी ने सत्संगियों से कहा, 'फ्रिज पर केले पड़े हैं आप लेते जायें' दादा भगवान ने उसे बहुत डांटा, गाली दी 'तू मालिक है। घर वाला है। यह केले तेरे हैं? किस हक से कहा तूमने।' योगी की परीक्षा थी। उसने कोई दलील नहीं दी। वरजाव, सरजाव नहीं किया। उसने माफी मांगी और कहा 'जितना बना हूँ, आपने बनाया है।

आगे, बाकी का भी, आप ही बनायेंगे।'

दादा भगवान के शरीर में इतना कष्ट था पर डाक्टर को कहते 'पहले से मैं ठीक हूँ' योगी जानते थे और डाक्टर भी समझता था, ठीक नहीं है। स्त्रियों की दयनीय दशा देख कर दादा भगवान ने संकल्प लिया था कि स्त्रियों का उद्धार करना है। उनमें जागृति है साहस भरना है। इसके लिए उन्हें स्त्री चोले में एक ऐसे सहयोगी की जरूरत थी जो उनका कार्य पूरा करे। दादा भगवान की सब्ज वाली आंख ने भगवान जी में ... वह सभी खूबियां देख ली थीं।

दादा भगवान ने दूसरी बार महसूस किया "मिल गया जो मिलना था। अब काम क्या बाकी रहा" पहली बार उन्होंने महसूस किया था, जब उन्हें सच्चे गुरु की तलाश थी और उन्हें मिल गया था।

दादा भगवान के इस फैसले से सभी मुतस्सर थे। कुछ
योगी असहमत भी थे। वह भी सहमत हो जायें और अपनी
आंखों से देखें, कि भगवान दादा लक्ष्मी Great Beauty
इस कहानी अपने के लिए Right Choice थी है और
भगवान [illegible] है। दादा भगवान ने
[illegible] जी की कड़ी से कड़ी, बड़ी से बड़ी परीक्षाएं
ली। योगियों ने

बाद में दादा भगवान ने कहा तुम्हारी तसल्ली के लिए और
तुम्हारी खुशी के लिए मैंने इतनी परीक्षाएं ली हैं।

भगवान जी ने दादा भगवान को निर्बन्धन, निर्लेप
नारायण देखा था। वही आदर्श उन्होंने अपने में अपना लिया। एक
बार भगवान जी [illegible] सब के बीच में बैठे थे। देखा कि अ
के शरीर की बेटी चन्द्रा अपने पति के साथ और चाचा के साथ
इधर आ रही है। भगवान जी तो असंग थे "ना मैं किसी का
ना कोई मेरा"। परन्तु चन्द्रा ने मोह की डोरी से बांध रखा था।
वह भगवान नहीं, मां के रूप में देखना चाहती थी। परीक्षा की
घड़ियां थीं।

भगवान जी ने मौन वाणी चलानी शुरू कर दी। सत्संग घन्टा भर
चला।

चन्द्रा उसका पति, उसका चाचा बैठे रहे। सत्संग खत्म हुआ।
योगियों के साथ प्रश्न उत्तर का लेन देन शुरू हुआ। वह तीनों
चुप चाप उठकर चले गये। दादा भगवान के शब्दों में "मोह
सात चमड़ी तक होता है। उसे काटने के लिए पड़ा तो होगा हो ना।

दादा भगवान और भगवान जी [illegible] की स्थिति एक सी
थी। Carbon Copy थे, एक दूसरे के।

एक योगी ने दादा भगवान से कहा "आप की स्त्री तरसती है,
आप के एक शब्द के लिए।
आप योगियों को प्यार करते हैं, उन्हें घुमाते हैं। अपनी परिवार
[illegible] को भी [illegible] करें घुमायें फिरायें"।
दादा भगवान ने कहा "ऐसे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ेगा।
वह ही मोह में आकर दुखी हो जायेगी।
[illegible] में कहा "गधे को हम घोड़ा नहीं बना सकते"।

जिनकी वृत्ति भोगों में है - वह योग में कि सेवेगें ?

एक बार योगियों की खुशी के लिए दादा भगवान ने अपने शरीर की पत्नि को कहा आज मेरे योगी आ रहे हैं। मेरे दामाद है मैंने उन्हें अपनी बेटी, ब्रह्म विद्या दी हुई है। तू उनके लिए खाना तैयार करेगी ? पत्नि ने खुशी खुशी सब खाना बनवाया। Variety थी खीर। हलवा, खीरे, मिठाई फ्रूट सब कुछ था। चान्दी के बर्तन निकाले। उसे इन्तजार था, दादा के दामाद आ रहे हैं।

जब योगी आये तो उसका mood off हो गया। बूढ़े बूढ़ियां- कोई काना कोई लंगडा। दादा भगवान की ही यह समझ थी। उस दिन उसने खुद संकल्प कर लिया। मुझे यह ज्ञान नहीं चाहिए - ना ही योगियों के लिए यह निष्काम सेवा चाहिए। उस दिन से उसने दादा भगवान के लिए अपने रिश्ते का, अधिकार का बन्धन तोड़ दिया और असंग होगई।

एकदिन भगवान जी सत्संग से लौटे तो उनके घर के बाहर मोटा ताला लगा पड़ा था। वह चुप चाप हैरान खड़े थे। साथ वाले फ्लैट का दरवाजा खुला। उस योगी ने भगवान जी के हाथ में उनकी दो साड़ियां और बाकी का जो जरूरी सामान था, भगवान जी के हाथ में पकड़ा दिया और बताया सब जने COLOMBO चले गये हैं। जाने वालों में भगवान जी की मामी - माई - बच्चे और शरीर की माता भी थी।

भगवान जी के अन्दर वैराग्य आ गया। कौन अपने हैं ? कौन सा आधार सच्चा है ?

भगवानजी ने पोसन को THANK YOU कहा। अपना सामान लिया और वैराग्य में आ गये।

भगवान जी की असली परीक्षा तब हुई जब भगवानजी के शरीर की बेटी चन्द्रा का शरीर शान्त हुआ। भगवान जी observe कर रहे थे। उनके चेहरे का एक भाव नहीं बदला। भगवान दादा उठकर सत्संग जाने लगे तो भगवान जी भी उठकर साथ चल पड़े।

इसके बारे में कई आलोचनाएं हुई। भगवान जी को बुरा भला भी कहा गया।

चन्द्रा का क्रियाक्रम समाप्त करके सब वापस आ गये। भगवान जी पलंग पर लेटे थे। उनका मुंह दीवार की तरफ था। दादा भगवान तो भगवान जी को परीक्षा में पूरा उत्तीर्ण देखना चाहते थे। कमरे में अन्धेरा था। दादा भगवान ने TORCH जला कर देखा - भगवान जी उदास है? शायद रो रहे है? करामतों की करामत थी। भगवान जी गहरी नीन्द सो रहे थे। ऐसी नाजुक परिस्थिति में, कोई इतना निर्लेप होकर अशोक होकर सो सकता है?

उस वक्त सबने एक - मत होकर कहा यह अमर ज्योति है। जागन्दा ज्योति है। उनके चेहरे पर पानी की लकीर भी नहीं आई। दादा भगवान ने कहा "तुम्हारी खुशी के लिए इनकी इतनी परीक्षाएं ली है"। सूरज को कोई कब तक ढक कर रख सकता है? दादा भगवान ने कहा "ब्रह्मज्ञानी को दुख, पानी की लकीर की तरह भासता है। आज तुम सबने देखा है। पानी की लकीर भी नहीं है"

सबने अपनी आंखों से देखा - जाना और मान लिया कि यह पूर्ण है। परिपूर्ण है। "समता और ममता दोनो साथ साथ नहीं चल सकती" तो समता के लिए भगवान जी ने ममता का त्याग कर दिया था।

दादा भगवान का प्रत्येक वचन भगवान जी सूक्ष्मता से Catch कर लेते। भगवान जी कहते है "हमने कभी कापी पेन्सिल नहीं रखी है। दादा जी भी बोलते हमारी छाती पर छप जाता था।

हम पर भी हालते आई, मुसीबते आई। उनसे हम निकले है तो यह प्रारब्ध की बात नहीं है। यह हमारा पुरुषार्थ है और तपस्या है। [illegible] तुम्हारी अपनी है। "रो रो कर जी या मुस्कुरा कर, हंस कर जी"। कैसी भी मुश्किले आई भगवान जी ने अपना नारा रखा "रुकना तेरा काम नहीं है - चलना तेरी शान"

14

## " दो महान हस्तियां "

1945 की बात है।

एक पुराने सत्संगी के घर दादा भगवान ज्ञान सुना रहे थे। दैवी इत्तिफाक बनना था। भगवान जी भी वहां पहुंच गये, घन्टों ज्ञान चला। यह अडोल बैठे रहे। तन मन एक रस होकर बैठे रहे। ज्ञान सुनते रहे। उस दिन से भगवान जी कहते हैं कि "मेरी नींद ही उड़ गई थी" हम ही कहते थे कि जो हमारी नींद खराब करेगा उसी को हम गुरु मानेंगे।

गुरु करना नहीं पड़ता। पता भी नहीं लगता और सच्चा गुरु अन्दर प्रवेश होकर पसर जाता है।

भगवान जी के शब्दों में "हमने जिस दिन दादा का ज्ञान सुना दादा हमारे भीतर गुरु रूप में प्रवेश कर गया। उसी दिन से सारी दुनियां को हमारा NO हो गई। सिर्फ गुरु को YES थी"

कुछ दिनों बाद भगवान जी का कराची जाना हुआ। वहां एक शादी थी, जो attend करनी थी। जहां यह जाकर ठहरे, वह दादा भगवान का नजदीकी मित्र था। दादा भगवान भी शादी attend करने आये और यहीं ठहरे। एक ही छत के नीचे दो दो दिव्य हस्तियां थीं।

ज्ञान यज्ञ दिन रात चलने लगा। ब्रह्म ज्ञानी का भोजन ज्ञान। शादी के रौनक मेले की, खान पान की, दोनों को भी परवाह नहीं थी। जीवन ज्ञान-मय हो गया और ज्ञान ही जीवन बन गया।

एक ज्ञान सुनाने वाले थे। एक ज्ञान सुनने वाले थे पर दोनों ही महान शक्तियां थीं। एक ही सिक्के के दो त क थे। दोनों अपने निश्चय में थे। जो कोई सुनाने वाला था, जो कोई सुनने वाला था। दोनों ही सतचित आनन्द रूप थे। सच्चा योगी कोरेपन से ऊपर होता है।

दादा भगवान का सारा जीवन निष्काम यज्ञ था। कोई आकांक्षा करता तो उनका एक ही जवाब होता था। "मैंने कुछ नहीं किया है। अपनी जान को जोखिम में डालकर उन्होंने दो डूबती हुई लड़कियों को बचाया और कहा "तुम्हें ही कोशिश की —

हमने क्या किया ? [illegible] का उद्धार किया पर उसका श्रेय अपने पर नहीं लिया, यह कहते [illegible] कद्दू का घर है।

[illegible] भगवान जी की नम्रता [illegible] भगवान से कम नहीं है। वही असली पता है। कोई कहता है आप की कृपा हुई भगवान जी कहते हैं [illegible] आपकी [illegible] की है। हमने क्या किया है? भगवान जी के शब्द [illegible]

"[illegible] के [illegible] से [illegible] सुना तो अन्दर चला गया। उसमें हमने क्या किया ?" दादा भगवान को विश्वास हो गया। यही है वह सुयोग्य सहयोगी जिनकी तलाश थी। यही है दिव्य हस्ति - यही BORN GREAT है। वह अपने मन में निश्चिन्त हो गये - दूसरी बार उन्हें आत्मा से मिला। मिल गया जो मिलना था। काम क्या बाकी रहा ?

भगवान जी कहते हैं : जिस दिन हमें गुरु मिला हमने मुड़ कर फिर जगत को व जगत वालों को नहीं देखा। "मैं गुरु का और गुरु मेरा हो गया। बाकी और क्या चाहिए था ? हम दादा के साथ रोज पैदल करने जाते। बाकी स्त्री पुरुष के चोले का भान तक ना था। ज्ञान का रिश्ता था। आत्मा से आत्मा का रिश्ता था [illegible] ने दादा भगवान का पूरा पूरा हाथ बटाने लगे। चाहे वाणी दादा भगवान चलाते थे, या भगवान दादा लक्ष्मी चलाते थे, योगी आत्म आनन्द में आ जाते। दोनों की अन्दर से आत्मा की आत्मा से link थी। जो बात बाहर वाले कमरे में दादा भगवान के मुख में होती थी - योगी अन्दर वाले कमरे में आते तो देखते कि वही बात भगवान जी [illegible] के मुख में है।

निराकार के ज्ञान रथ के दोनों पहिए एक सरीखे - मजबूत थे। दादा भगवान को भगवान लाल जी [illegible] ने कहा था एक दिन सारी दुनिया तुमको झुकेगी और बात सच हुई। अब दादा भगवान ने भगवान [illegible] जी को कहा "यह रानियाँ की [illegible] [illegible] बनेगी"। यह बात भी सच हुई है। आज रानियाँ [illegible] [illegible] कर इन्तजार करती हैं। कब दर्शन होवे ? कब बात [illegible] [illegible] वचन मिले ?

दादा भगवान ने निष्काम सेवा में कोई भी छोटा काम या बड़ा काम नहीं देखा। माथेरान में दादा भगवान योगियों के कपड़े धो देते, उनके जूठे बर्तन साफ कर देते, उनके बिस्तर बनाते योगी पैदल करके थक कर आते तो उनके पांव भी दबाते थे।

[illegible] भगवान जी भी निष्काम सेवा में शूर सेनानी रहे। योगियों की हर किस्म की सेवा कर देते थे। एक योगी का पति शान्त हो गया था। वह बहुत दुखी थी। दुख दूर करने का एक ही साधन है और वह है ज्ञान। उसी से भगवान दादा लक्ष्मी उस योगी के घर की सारी सेवा करते, उसका खाना बनाते, उसके बच्चे संभालते और उसे फारग करके दादा भगवान के पास भेज देते थे। उन्हें करुणा थी कि यह ज्ञान सुने ताकि इसका दुख दर्द दूर होवे।

माथेरान में भगवान जी सब योगियों का खाना बना लेते थे। सब को खिला कर बाद में स्वयं खाते थे। थैला उठा कर बाजार से खरीदारी भी खुद करके आते थे। एक दिन उन्हें प्रेरणा आई उन्होंने purse उठा कर फेंक दिया कि हम इस money को हाथ ही नहीं लगायेंगे। दादा भगवान सब observe करते थे।

उन्होंने भगवान जी [illegible] से kitchen की सेवा ले ली और उन्हें ज्ञान की सेवा दे दी।

इससे ज्ञान यज्ञ और भी अच्छा चलने लगा। भगवान दादा लक्ष्मी कहते हैं "हमें चाचा, मामा याद नहीं हैं कि कभी [illegible] भी। एक गुरु ही याद है। जो अपनी हस्ती मिटा गई थी [illegible] सागर से मिल कर [illegible] सागर बन गई थी राधा श्याम हो गई थी [illegible] तू - तो [illegible] तू [illegible] भेद ना बचा [illegible] योगी आता, दादा भगवान उसे भगवान जी के पास भेज देते। भगवान जी उसके साथ [illegible] दादा भगवान के पास भेज देते। भगवान [illegible] गुरु की agency [illegible] करते थे खुद मालिक [illegible]।"

कोई [illegible] [illegible] अपने के लिए [illegible] तो [illegible]
आकांक्षाओं को [illegible] कर देते थे और [illegible] पीछे हो जाते थे।
अपना कोई [illegible] हो गये [illegible] [illegible]
[illegible]

[illegible]

दादा [illegible] [illegible]
भगवान दादा लक्ष्मी को [illegible] मदद मिली है [illegible]
उनकी हम पर बड़ी कृपा रही है।
हम दोनों एक दूसरे की मदद से ऊँचे उठे हैं। आज तक हम
दोनों एक दूसरे को सुजाग करते रहते हैं।
दादा भगवान के जो माया के बन्धन बाकी बचे थे। वह
भगवान दादा लक्ष्मी ने कटवा दिये।
दोनो ने ही एक दूसरे को मोह के बन्धनों से मुक्ति
दिलाई। भगवान श्री [illegible], भगवान दादा के घर वालों
को समझाते दादा। सब पुराने वाला दादा नहीं है। तुम
पहचानो यह पैगम्बर है। उद्धार करने आया है,
दादा भगवान कभी भी भगवान दादा लक्ष्मी की बात को
overrule नहीं करते थे। एक बार उन्होंने एक लड़का को कहा
" तुम यहां सो जाओ। उसने कहा मुझे भगवान जी
ने यहां सोने को कहा है तो मैं यहां सोऊंगा।
दादा भगवान समझ गये। इसकी श्रद्धा भगवान जी
में ज्यादा है तो उसे कभी भी आदेश नहीं देते थे। तुम
यह करो। तुम ऐसा करो।
जितना total समर्पण दादा भगवान का अपने गुरु के आगे
था। उन्हीं के नक्शे कदमों पर चल कर भगवान जी
का total surrender अपने दादा भगवान के लिए [illegible]
के [illegible] ने [illegible] हमारा तन मन धन हमारे गुरु का है। हमें नहीं
लगता, यह शरीर भी हमारा है। कोई भी पदार्थ ऐसा नहीं
लगता कि यह हमारा है। सब मेरे गुरु की अमानत है।

दोनों ही
अपनी ब्रह्मनिष्ठा में थे। दोनों की एक ही Guru Consciousness थी। एक बार, एक जना भगवान दादा के पास आया। "दर्शन करने आया हूँ।" दादा भगवान ने कहा, "मेरे कान के - नाक के - किसके दर्शन करने आया है?" भगवान जी के पास आकर एक ने कहा "दर्शन करने आया हूँ", भगवान जी ने कहा "मेरे नहीं, तुम अपने दर्शन करो।"

भगवान जी ने एक पाँच साल की लड़की से उसका नाम पूछा। उसने कहा 'Shirley है।' भगवान ने कहा 'Shirley कहाँ है?' वह बच्ची अपने शरीर के जिस अंग को बताये, भगवान जी कहे "यह तो बांह है। यह तो पेट है। यह तो मुँह है। Shirley कहाँ है?"

यह बात उस बच्ची को इतनी touch कर गई - जो चालीस साल बाद वह Spain से भगवान जी के पास पहुँची कि मुझे निश्चय में टिकाओ। आप ने कहा था 'Shirley कहाँ है?' आज मुझे इस नाम से ऊपर करो। यह दादा भगवान के घर की रिश्तेदार है। उसे मालूम है, भगवान जी पर कितनी कितनी मुसीबत आई है, और कैसे धीरज से, सहन-शक्ति से वह उनसे पार उतरे हैं - Shirley ने कहा "आज यह भगवान हैं पर इन्हें कितनी आग में से गुजरना पड़ा होगा। इन्हें देख कर मुझे लगता है जैसे मेरे दादा - दादा भगवान ही बैठे हैं।"

भगवान लालजी साँई ने कहा था 'जो शीश दे - वह ईश पाये' दादा भगवान ही इस बात में खरे उतरे थे। इन्हें अपने गुरु का साथ, केवल एक साल मिल पाया था पर यह एक साल वह अपने गुरु के चरणों में ऐसा लीन हो बैठे रहे थे, कि उन्हें दीन दुनिया की कोई खबर ही नहीं रही थी। जगत वालों से कितना अपमान मिला, गालियाँ मिलतीं। भगवान दादा कहते

"तुसां गोरियाँ नूं नज़र अचन थियें
✓ जिन्हें वाजे कृष्ण कान्हाई जी शहनाई"

भगवान जी को दादा भगवान मिल गये ये तो जैसे उनका [illegible] जन्म हो गया था। उन्होंने अपना Post [illegible]

[illegible]

भगवान ने इन [illegible] वालों में कहा जगतवाले पैगम्बर को [illegible]

भगवान अपने को छुपा कर रखते थे। पर जब देखते कि सब अपने को [illegible] में हैं तो उन्हें करुणा होती कि इनका चोला यूँ ही व्यर्थ ना चला जाये। तब उन्हें अपने को प्रकट करना पड़ता है। दादा भगवान ने कहा "तुम कहते हो राम पैगम्बर था। कृष्ण पैगम्बर था। नानक पैगम्बर था। तुम कल की बात छोड़ो तुम आज की बात करो। आज के युग में कौन पैगम्बर है। दादा भगवान ने भगवान जी में अपना ही रूप देखा इन्हें भी पैगम्बर ही देखा। उन्होंने कहा तुम भागवाले हो। अच्छे संस्कार वाले हो जो तुम्हारे लिए इस वेष में पैगम्बर आया है। तुमने एक chance [illegible] अब तुम्हें दोबारा chance मिला है। इसको नहीं खोना।"

एक बार दादा भगवान को एक योगी ने पत्र लिखा दादा भगवान ने [illegible] दिया और नीचे जहां लिखने वाले का नाम होता है लिखा DIVINE DADA [illegible] और आदेश किया कि आज से सब डाक इसी नाम पर आये और इसी नाम से जाये।

ब्रह्मज्ञानी जो स्त्री है जो पुरुष है। इसी से, सबको यह [illegible] को बिल्कुल ठीक प्रतीत हुआ था।

अंतर में [illegible] [illegible] विनती करता है "गोविन्द। मुझे अपना नाम दे दो।" ऐसा मांगा ही नहीं था। पाया बिन मांगे ही मिल गया। गुरु नहीं तो [illegible] गुरु ने आप ही अपने नाम के साथ नाम जोड़ कर दो नामों

को अद्वैत का रूप दे दिया था। भगवान जी की
सच्चाई रंग लाई थी। वह कहते "मेरा नहीं। मेरे गुरु का नाम
रहे।" दादा भगवान की अमर समाधि ले लेने के बाद एक चेला
ने पत्र लिखा। बाहर address "था भगवान लछमी" उस दिन
भगवान जी ... ने बड़े जोश की वाणी चलाई - "पूरे नाम
को अधूरा क्यों किया है? दादा का नाम क्यों मिटाया है? दादा
आज भी हैं। हैं ही हैं।"

भगवान जी कहते हैं "हम तो दादा भूलते ही नहीं हैं।
हम चाय पीते हैं - पानी पीते हैं - पैदल करते हैं - हमें दादा
याद ही हैं दादा की इजाज़त के बिना तो हमारा एक शब्द
भी नहीं निकलता है।"

सच्चाई तो इसी में है कि आज भी वह खुद को नहीं, अपने
गुरु को प्रकट करते हैं। वह कहते हैं

"हमने हमारे गुरु को तीस साल सुना। हमें कोई कसर नहीं
आई। गुरु के पास तो हीरे मोती होते हैं।"

जितना प्यार दादा भगवान को अपने गुरु के साथ था और
उन्होंने निभाया। वही आदर्श भगवान जी ... का है। वह
कहते हैं "प्यारे में प्यारा हमें हमारा गुरु था।"

"गुरु से प्यार के माने हैं - गुरु को हाज़िर नाज़िर देखना। गुरु
से प्यार के माने हैं। गुरु के वचन पर मिटना।"

हाट वाले पैगम्बर को पहचानने में बहुत देर लगा देते हैं।
अपने अन्तिम वक्त आने पर दादा भगवान ने शरीर की पालकी
ने थाल सजाया और भगवान जी ... ने आरती उतारी
फ़रमाया कि "इन्होंने ही मेरी आंखें खोली हैं।" भगवान जी
के शरीर को मौत, बाद बाद में चिट्ठी लिखकर माफी
मांगते हैं। "माफ करना जी मैं आपको पहचाना नहीं था।" वह
कहते कि "निरंकार की मुझपर बड़ी कृपा हुई है, जो मुझे लम्बी
उम्र दी है। मुझे भगवान को पहचानने का मौका मिल गया है।"
कोई चुन चुन कर गुरु शरण में पहुंचता है; और गुरु की कृपा से
"विरला है कोई बड़भागी जो सतगुरु पाये"

15

## "अन्तिम यात्रा :- अंतिम यात्रा" 90

[illegible] भगवान - बादशाह [illegible] अभी [illegible]
[illegible] बुद्ध [illegible] स्वीकार करो अपना [illegible]
[illegible] तपस्या [illegible]
[illegible] भगवान के शरीर में [illegible] उनकी तबीयत ठीक नहीं रहती थी।

[illegible] का ज़ोर था। उनका चेहरा सूज जाता। शरीर में असहनीय पीड़ा थी। डाक्टर तबीयत पूछता तो बाबा भगवान कहते, "कल से आज ठीक हूँ।"

जब योगी पूछते "बाबा आपकी तबीयत कैसी है" तो बाबा भगवान निश्चय का जवाब देते। "तुम मुझे मरीज़ नहीं समझना। मैं तो जो हूँ सो हूँ। मरीज़ तुम हो, जिन्हें मेरे पास सीखने के लिए आने की ज़रूरत है।"

बाबा भगवान का कष्ट योगियों से देखा नहीं जाता था। एक योगी ने पूछा 'इतनी तपस्या के बावजूद, ब्रह्मज्ञानी के शरीर में कष्ट क्यों आते हैं।'

बाबा भगवान ने कहा "अपने शिष्यों की गलतियों की सजा गुरु को भुगतनी पड़ती है। रुक्मणी ने राधा को गर्म दूध पिलाया तो कृष्ण के पांव में छाले हो गये थे।

"सतगुरु शिष्य की आत्मा, शिष्य सतगुरु की देह"

सचमुच कोई विरला बड़भागी जो गुरु की Consciousness को जानता है, जो पैगम्बर को पहचान लेता है और जो ब्रह्मज्ञानी की कदर करता है।

एक भक्त बाबा भगवान को लखनऊ बुलाता था। उसके बहुत आग्रह करने से बाबा भगवान ने उसे वचन दे दिया कि [illegible] उसके लखनऊ जरूर आयेंगे। बाबा भगवान ने कहा इस चोले का मकसद पूरा हुआ है। एक योगी से कि

वायदा किया है - वह निभाना बाकी है।

दादा भगवान ने लखनऊ जाने की इच्छा प्रकट की। प्रेमियों ने बहुत मना किया कि आप की सेहत इजाजत नहीं दे रही। दादा भगवान ने कहा "मुझे वहां की धरती पुकार रही है।" दादा भगवान अपने कुछ योगियों के साथ लखनऊ पहुंचे। वहां ऐसा सत्संग हुआ, ऐसा ज्ञान यज्ञ चला कि लखनऊ वालों के लिए इस धरती पर वैकुंठ बन गया था। सबने मौज ली।

वहां से दादा भगवान को एक भक्त अपने पास रुद्रपुर ले आया। वह बड़ा श्रद्धालु भक्त था। उसका घर एक गांव में था जहां बिजली तक नहीं थी और घर में आराम के बाकी साधन भी नहीं थे।

पैगम्बर को कुछ नहीं चाहिए। "भाव का भूखा हूँ मैं" बस! सुदामा के घर स्वयं भगवान कृष्ण पधारे थे। शरीर में अत्यन्त दुर्बलता के कारण, यहां दादा भगवान की वाणी नहीं चल रही थी, पर दादा भगवान के शान्ति का संदेश, मौन में भी सबको तृप्त कर रहा था। दादा भगवान त्रिकाल दर्शी थे। वह जानते थे आगे कब, क्या होने वाला है। एक रात सब सोये हुए थे। दादा भगवान ने एक एक को जगाया और ज्ञान सुनाना शुरू किया। वह ऐसी ऊंची, ऐसी गहरी वाणी थी। सबको नशा आ गया। दादा भगवान ने कहा "मानता मानता है भगवान, बाकी तू क्या बनना चाहता है? जो कुछ भी बनेगा पर भगवान से तो कम ही बनेगा।" अपने भक्तों को भगवान की वाणी का यह अन्तिम प्रसाद था। कोई कोई विरला भाग्यवान उस घड़ी वहां मौजूद था।

अगली सुबह को दादा भगवान ने कहा 'जिसकी जो भावना होवे वह पूरी कर लेवे'।

दादा भगवान का यह संकेत किसी ने नहीं समझा। एक योगी बाजार से नई पोशाक ले आया और दादा भगवान को पहनाई। दादा भगवान के शरीर की हालत बिगड़ती जा रही थी। खांसी उखड़नी शुरू हो गई। फेफड़ों में खून जमा हो जाने से श्वांस लेने में बहुत तकलीफ हो रही थी।

योगियों ने आपस में तय किया कि लखनऊ चलना चाहिए। क्योंकि रुद्रपुर में अच्छा डाक्टर, अच्छा treatment उपलब्ध नहीं था। योगियों ने वापस लखनऊ की reservation करा ली। दादा भगवान के शरीर की हालत देखकर सभी फिक्र में थे। एक दादा भगवान ही निश्चिन्त थे।

कितनी ही तकलीफ में, उन्होंने अपना कष्ट कभी व्यक्त नहीं किया था और न ही कभी कहा था कि मुझे इलाज की जरूरत है। डाक्टर को दिखाओ। जैसे तैसे, ट्रेन का सफर कटा।

लखनऊ पहुँचे तो उन्हें डाक्टर देखने आया, 'इतनी तकलीफ में भी आप शान्त हैं।' दादा भगवान ने कहा तुम को आत्मा में आना मुश्किल लगता है - मुझे देह में आना मुश्किल लगता है।

इस वक्त जो सेवक थे - उनमें दो योगियों को भगवानजी का हर वक्त दादा भगवान के नजदीक रहना, सेवा करना अखर रहा था। उन्होंने भगवान जी को कहा आप बाहर को संभालें। योगी आ रहे हैं - उन्हें ज्ञान देवें, सत्संग करें। हम अन्दर दादा भगवान को संभाल रहे हैं। भगवानजी, उसी वक्त बाहर चले गये और उन योगियों का आदेश पालन किया। दादा भगवान पूरे मौन में आ गये। वह बात भी नहीं कर रहे थे - दवा लेने को, पानी पीने को मुँह भी नहीं खोल रहे थे। समस्या गंभीर हो गई थी।

उन्हीं दोनों योगियों को विचार आया कि भगवानजी को बुलायें और वही कोशिश करें, क्योंकि दवा देनी जरूरी थी। अन्दर आते ही भगवानजी ने पूछा 'दादा किधर हो', दादा भगवान ने कहा मैं तुझमें समाया हूँ। तू मुझमें है।

दादा भगवान की आवाज सुन कर सबको तसल्ली हो गई और भगवान जी फिर से, उनकी सेवा में लग गये। अब किसी को कोई एतराज भी नहीं रहा था। दादा भगवान के शरीर में अत्यन्त कमजोरी थी।

दादा भगवान semi conscious हो गये। डाक्टर ने injection लगाया तो होश में आ गये। उठकर बैठे तो देखा

कि सभी के चेहरे उतरे हुए हैं। सभी चिन्ता ग्रस्त थे।

दादा भगवान को मुस्कुराते चेहरे, हंसदिया, खिलदिया ही अच्छा लगता था। उन सबको हंसाने के लिए, दादा भगवान ने एक चुटकुला सुनाया। सभी के चेहरे खिल गये। कैसी अजीब लीला हो रही थी। दादा भगवान 'COMA' में चले गये। योगियों के दिल बैठे हुए थे। आंखें बड़ी मुश्किल से आंसु रोके हुए थीं। सभी को अहसास था क्या होने वाला है। उस घड़ी के दस मिनट पहले दादा भगवान के होंठ हिले। एक योगी ने पास आकर गौर से सुना - दादा भगवान के शब्द थे 'मैं अजर हूँ। मैं अमर हूँ। ऐसी कोई तलवार ही नहीं है जो मुझे मार सके। दादा भगवान ने ब्रह्म ब्रह्म कहा और ब्रह्म में ही लीन हो गये।

बाहर योगियों का भीड़ तो जमा ही था। बारी बारी से अन्दर दर्शन को आने लगे। एक भक्त ने रोते हुए दिल से, रोती हुई आंखों से जब दादा भगवान के चरणों में सिर झुकाया तो उसके सिर का दर्द migraine हमेशा के लिए ठीक हो गया। ऐसे कई करिश्मे हो रहे थे। शहर शहर से योगी पहुंचने शुरू हो गये। दिल्ली, पूना, बम्बई से भक्त आये। ऐसी लीला हुई कि दादा भगवान के घर परिवार के लोग पहुंच नहीं पाये। उन्हें टिकिट ही नहीं मिली थी। निराकार के खेल निराले हैं।

दादा भगवान का पार्थिव शरीर बर्फ पर रखा गया। ओम् की धुनी से वातावरण गूँज रहा था।

बाहर भगवान जी का ज्ञान यज्ञ, लगातार चल रहा था। शक्ति वही थी - ज्ञान वही था - बाहर का रूप आकार ही फर्क था।

भगवान जी का ज्ञान सबको शक्ति दे रहा था। निश्चय में खड़ा कर रहा था। योगी रोते हुए आ रहे थे और रोने के लिए ही आ रहे थे कि बाहर उनका दुःख कौन समझे? भगवान जी की वाणी [illegible] में चल रही थी।

रोते क्यों हो? क्या है जो दादा ने तुम्हें नहीं दिया है? भगवान जी के शब्दों में ताकत थी, जो योगी रोना बन्द करके ज्ञान सुनने लगते थे।

भगवान जी के शब्द हैं "जब हमने जगत मिथ्या किया था तो हमें प्यार में प्यारा हमारा दादा था।

जब हमारे दादा का शरीर शान्त हुआ तो हमने एक आँसू भी नहीं बहाया। सबने अचरज किया था।

हमारी फलक में, हमारी झलक में कोई फर्क नहीं आया था। यह है बात उस कठिन परिस्थिति में गुरु जी अपने पूरे निश्चय में थे। गुरु का हाथ बाहर से नहीं अन्दर से पकड़ना है। हमारा तो एक शब्द भी दादा की इजाज़त के बिना नहीं निकलता। दादा तो है ही है।"

दादा भगवान कहते थे "तुम अपनी मौत पहले ही कर के बैठे तो मरे हुए को कौन मारेगा। एक बार Voters बने लेने वाले - दादा भगवान के घर आये - उन्होंने पूछा 'मघनमल यहीं रहता है?'

दादा भगवान ने कहा "मघन तो कब का मर गया है। उसको उसके गुरु ने मार दिया है।"

दादा भगवान कहते "मैं आत्मा हूँ। जिसका तीन कालों में नाश नहीं है।"

दादा भगवान के शरीर को पालने का शरीर जब शान्त हुआ था तो दादा ओम, ओम, ओम की धुनि लगाते हुए और गाते हुए जनाजे के साथ साथ चले थे। उनकी आँख से एक अश्रु मोती भी नहीं गिरा था।

दादा भगवान कहते थे
"मौत है शादी।
जीवात्मा का परमात्मा से मिलाप है।"
ज्ञानी भी नहीं मरता। अज्ञानी भी नहीं मरता।
मौत है तन का भर्म। मौत नहीं मारती।
इन्सान को मौत का ख्याल मारता है।"

दादा भगवान ने कहा "यह मुर्दों का शहर है। यहाँ मुर्दों का नाच हो रहा है। मैंने जब से मुर्दों का सहारा छोड़ा है, मुझे अविनाशी आत्मा का सहारा मिल गया है।"
"आत्मा ना जन्मता है ना मरता है।"

Date: 1 . 95

जो निश्चय दादा भगवान का था वही परम निश्चय आज भगवान जी का है।

इन्हीं के शब्दों में तुम्हारा कोई मरता है तो तुम अपने को ज्ञान देते हो।

हमने पहले ही समझ लिया है - सब मरे पड़े हैं। इसलिए हमारा कोई मरता ही नहीं है।

भगवान जी के शरीर की बेटी शान्त हुई थी तो दादा-भगवान ने सत्र से कहा था, देखो। तुम अपनी आंखों से देखो - पाजी की लकीर भी नहीं आई है। इनके चेहरे पर

कबीर ने जगत को मुर्दों का गांव कहा है जहां - राजा भी मरेगा और प्रजा भी मरेगी। पीर पैगम्बर भी सदा के लिए रहने वाला नहीं है।

राम जी वशिष्ठ मुनि से कहते हैं

आज मेरे पितामह कहां हैं? उनके पितामह कहां हैं? इसी से, मेरे पिता और सभी बन्धु बान्धव भी एक दिन उठ कर चले जाने वाले हैं। फिर मैं इनके मोह बन्धन में क्यूं आऊं?

दादा भगवान ने समता निमित ममता का त्याग कर दिया था। वह कहते थे भक्त हमारे। हम भक्तों के और यही हुआ। दादा भगवान के शरीर का अन्तिम संस्कार सत्संगी योगियों ने ही सम्पन्न किया। रिश्तेदार तो पहुंच ही नहीं सके थे।

यह है उनतीस अप्रैल 1975 का यादगार दिन था।

वह ज्ञान की ज्योति, अमर ज्योति बन कर आज भी शाश्वत है। साकार ने निराकार रूप ले लिया है। है ही है।

इससे भगवान जी कहते हैं

तुम साल में एक ही 29 अप्रैल को दादा का दिन कहते हो। हर दिन दादा का दिन है।

केवल निर्वाण दिवस को श्रद्धा के पुष्प चढ़ाना श्रद्धा नहीं है। श्रद्धा वह है जो गुरु को हर वक्त हाजिर नाजर देखे। उनतीस का दिन के मान तुम्हारा उन्नति

Date :

का दिन है। हम पर बाबू [illegible]

[illegible] अनुसार

[illegible] फहराता सुन्दर उपवन बन गया है।

[illegible] जी की है, तो आज

एक [illegible] से, आज अनगिनत खुश हुए

[illegible] भगवान जी कहते हैं हमारा जीवन

हमारा जीवन है। बाबा का जीवन है

बाबा भगवान के सुन्दर, अमूल्य शब्द है

तुम्हारे अच्छे संस्कार हैं जो आज तुम्हारे लिए पगडंडी

[illegible] है [illegible] एक चांस [illegible] दिया है। अब तुम्हें दोबारा

चांस मिला है। इसे नहीं खोना। हे प्यार सद्गुरु भगवान।

गुरु के साथ जितनी तपस्या आपने की है

गुरु के साथ जितना आपने निभाया है - आभास करें

कि हम आपके आदर्शों से, आपके नक्शे कदमों पर चलें।

गुरु रिझे तो बेड़ा पार। आज ऐसी महान हस्तियों को

नमस्कार है उस ज्ञान ज्योति, अमर ज्योति को नमस्कार है,

तो इस ज्ञान ज्योति, अमर ज्योति को भी नमस्कार है।

उस सत्य शिव अनन्तम स्वरूप को नमस्कार है, तो इस

सत्य शिव अनन्तम स्वरूप को भी नमस्कार है।

॥ ओम् ॥